UNIVERSAL LIBRARY
OU_178848
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—552—7-7-66—10,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 T12N Accession No. P. G. H544

Author ठाकुर, रवीन्द्रनाथ.

Title नष्ट नीड़. अनु. धन्यकुमार जैन. 1947.

This book should be returned on or before the date last marked below.

नष्ट-नीड़

मूल लेखक

स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अनुवादकर्त्ता

धन्यकुमार जैन

सर्वोदय साहित्य मन्दिर
हुसैनीअलम रोड, हैदराबाद (दक्षिण).

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, बम्बई ४

पहली बार
जुलाई, १९४७
मूल्य सवा रुपया

प्रिंटर्स—
अभिनय आर्ट प्रेस,
६१, बड़तल्ला स्ट्रीट,
कलकत्ता

नष्टनीड़*

पहला परिच्छेद

भूपतिको काम करनेकी कोई जरूरत नहीं थी। उसके पास काफी रुपया था, और देश भी गरम ठहरा। परन्तु ग्रहोंके कारण वह काम-काजी आदमी होकर पैदा हुआ था। इसीलिए उसे एक अंगरेजी अखबार निकालना पड़ा। उसके बाद फिर उसे समयकी लम्बाईपर कभी विलाप करते नहीं देखा गया।

बचपनसे ही उसे अंगरेजी लिखने और व्याख्यान देनेका शौक था। कोई खास जरूरत न होनेपर भी अगरेजी अखबारोंमें वह चिट्ठियाँ लिखा करता, और कुछ वक्तव्य न होनेपर भी सभामें कुछ कहे बगैर न मानता।

उस जैसे पैसेवालेको अपने दलमें पानेके लिए राजनीतिक दलपतियोंने उसका काफी यश गाया, जिससे अपनी रचना-शक्तिके विषयमें भूपतिकी धारणा काफी परिपुष्ट हो चली थी।

अन्तमें उसके वकील साले उमापतिने वकालतके पेशेसे हार कर बहनोईको कहा—"भूपति, तुम एक अगरेजी अखबार निकालो। तुम्हारी असाधारण···" इत्यादि।

भूपति उत्साहित हो उठा। पराये अखबारमें पत्र प्रकाशित करनेमें कोई गौरव नहीं, सोचा, अपने अखबारमें स्वाधीन लेखनी पूरी तेजीसे दौड़ सकेगी। साले साहबको सहकारी बनाकर बहुत कम उमरमें ही भूपतिने सम्पादककी गद्दी सुशोभित की।

---

* 'नष्टनीड़'=नष्ट हो गया है नीड़ या घोंसला अर्थात् बिगड़ गया है घर जिसका।

कम उमरमें सम्पादकीय नशा और राजनीतिक नशा बहुत जोर करते हैं। उसपर भूपतिको जोश देनेवाले भी काफी मिल गये।

इस तरह वह तो अखबारके नशेमें चूर हो रहा था, और इधर उसकी बालिका बधू चारुलता धीरे-धीरे यौवनकी ओर कदम बढ़ा रही थी। समाचारपत्रके सम्पादकको इस भारी समाचारका पता तक न लगा। भारत-सरकारकी सीमान्त-नीति किस तरह धीरे-धीरे बढ़ती हुई संयमका बन्धन तोड़ना चाहती है, यही उसके प्रधान लक्ष्यका विषय था।

पतिदेव पैसेवाले हैं, लिहाजा चारुलताको कुछ काम-धन्धा न करना पड़ता था। फल-परिणामशून्य फूलकी तरह परिपूर्ण आवश्यकताओंके बीच परिस्फुटित हो उठना ही उसके निश्चेष्ट दीर्घ दिन-रातोंका एकमात्र काम था। उसे किसी बातकी कमी न थी।

ऐसी अवस्थामें मौका मिलते ही वधू अपने स्वामीके बारेमें बहुत-कुछ ज्यादती करने लगती हैं, और दाम्पत्य-लीलाकी सीमान्त-नीति घर-गृहस्थीकी सम्पूर्ण सीमा लाँघकर समयसे असमयमें और विहितसे अविहितमें पहुंच जाती है। चारुलताको वह मौका नहीं मिला। अखबारकी चहारदीवारी तोड़कर पतिपर अधिकार करना उसके लिए कठिन था।

युवती स्त्रीकी तरफ ध्यान आकर्षित करके रिश्तेमें बड़ी किसी आत्मीयाने भूपतिको फटकारा, जिससे सचेत होकर उसने कहा—"तब तो चारुके पास किसी सहेलीका रहना जरूरी है, अकेली बेचारी क्या करे बैठी-बैठी!"

साले उमापतिसे उसने कहा—"तुम अपनी स्त्रीको हमारे यहाँ ले आओ न,—बराबरकी कोई स्त्री पास नहीं, चारुको जरूर सूना-सूना-सा लगता होगा।"

स्त्री-संगका अभाव ही चारुके लिए अत्यन्त दुःखदायक है, सम्पादककी समझमें यही आया; और सरहज मन्दाकिनीको अपने यहाँ बुलाकर वह निश्चिन्त हुआ।

जिस समय पति-पत्नीने प्रेमोन्मेषके प्रथम अरुणालोकमें परस्पर एक दूसरेको अपूर्व महिमासे मंडित चिरनवीन-सा देखा, उस समय किसीको भी यह नहीं मालूम हुआ कि दाम्पत्यका वह सुवर्ण-प्रभासे मंडित सुप्रभात अचेतन अवस्थामें कब बीत गया! नूतनत्वका स्वाद पाते ही दोनों एक दूसरेके लिए पुराने और परिचित-से जान पड़ने लगे।

पढ़ने-लिखनेकी तरफ चारुलताका एक तरहका स्वाभाविक आकर्षण था, इसलिए उसके दिन निहायत भार-स्वरूप नहीं बीतते। उसने अपनी कोशिशसे, अनेक उपायोंसे, अपने पढ़नेका इन्तजाम कर लिया था। भूपतिका फुफेरा भाई अमल थर्ड-ईयरमें पढ़ता था, चारुलता उससे पढ़ लिया करती थी; इतना काम वसूल करनेके लिए उसे अमलकी बहुत-सी ज्यादतियां सह लेनी पड़ती थीं। अकसर उसे होटलमें खाने और अंगरेजीकी साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें खरीदनेका खर्च देना पड़ता था। अमल कभी-कभी अपने मित्रोंको न्योता देकर उन्हें खिलाता-पिलाता था, और उस यज्ञका सारा भार गुरु-दक्षिणा-स्वरूप चारुलता स्वयं अपने ऊपर ले लेती थी। भूपतिकी तरफ से चारुलतापर किसी तरहकी मांग न थी; परन्तु फुफेरा भाई अमल जरा-सा पढ़ाकर इतनी ज्यादा मांग पेश करता था कि जिसका अन्त नहीं। इस बातपर चारुलता कभी-कभी कृत्रिम कोप और विद्रोहका भाव प्रकट करती थी; परन्तु किसी भले आदमीके किसी काममें आना और उसीके तरफसे स्नेहके उपद्रव सहना उसके लिए बहुत ही जरूरी हो उठा था।

अमलने कहा—"भाभी, हमारे कालेजमें एक राजाका दामाद पढ़ता है, वह खास रनिवासमें हाथके बुने कारपेटके जूते पहनकर आता है, मुझसे तो अब सहा नहीं जाता,—मुझे कारपेटके जूते चाहिए, नहीं तो इज्जत नहीं रहती?"

चारुने कहा—"हां, मैं यही तो किया करूं, बैठी-बैठी तुम्हारे लिए जूते बनाया करूं। दाम दिये देती हूँ, बाजारसे खरीद लेना अपना।"

अमलने कहा—“सो नहीं होनेका !”

चारु जूते सींना नहीं जानती, और अमलके सामने वह इस बातको स्वीकार भी नहीं करना चाहती। जब कि अमल चाहता है तो संसारमें इस एकमात्र प्रार्थीकी प्रार्थनाको पूरी किये बिना उससे रहा कैसे जाय ? अमल जब कालेज चला जाता, तब वह छिपे-छिपे खूब मन लगाकर कारपेटकी सिलाई सीखने लगी। और अमल जब खुद जूतेकी बात बिलकुल भूल चुका था, तब एक दिन शामको चारुने उसे निमन्त्रण दिया।

गरमियोंके दिन थे, छतपर आसन बिछाकर अमलके लिए थाली परोसी गई। धूल पड़ेगी, इस डरसे थाली पीतलके ढकनेसे ढकी हुई थी। अमल कालेजके कपड़े उतारकर, हाथ-मुँह धोकर, फिट-फाट होकर ऊपर पहुचा।

अमलने आसनपर बैठकर ढकना उठाया, खोलते ही देखा कि थालीमें बहुत ही खूबसूरत पशमी कारपेटके नये जूते रखे हैं! चारुलता कहकहा मारकर हँस पड़ी।

जूते पाकर अमलकी उमंगें और भी आगे बढ़ने लगीं। अब गुलूबन्द चाहिए, रेशमी रूमालके चारों तरफ फूलदार जाली लगा देनी होगी ; उसके बाहरवाले बैठने-उठनेके कमरेमें जो उसकी आराम-कुर्शी है उसपर तेलका दाग लग गया है, उसपर चढ़ानेके लिए रेशमी बेल-बूटेदार गिलाफ चाहिए !

हर बार चारुलता उसका विरोध करके कलह करती और हर बार बड़े जतन और स्नेहके साथ शौकीन अमलका शौक पूरा कर देती। अमल बीच-बीचमें कभी-कभी पूछ भी लिया करता—“भाभी, कितना और बाकी है ?”

चारुलता झूठमूठको कह देती—“अभी तो शुरू ही नहीं किया।” कभी कहती—“मुझे याद ही नहीं रही।”

पर अमल छोड़नेवाला शख्स न था। रोज याद दिला देता और मचलता रहता। हाथ धोकर पीछे पड़नेवाले अमलके इन उपद्रवोंका उद्रेक करा देनेके लिए ही चारु अपनी उदासीनता प्रकट करके विरोधकी सृष्टि करती, और सहसा एक दिन उसकी प्रार्थना पूरी करके कौतुक देखा करती।

धनाढ्य पतिके घर चारुको और किसीके लिए कुछ नहीं करना पड़ता, सिर्फ अमल ही एक ऐसा है जो उससे काम कराये बगैर मानता नहीं। इन सब छोटे-मोटे शौकीनी मेहनतसे ही उसकी हृदयवृत्ति चरितार्थ होती थी।

भूपतिके अन्तःपुरमें जो थोड़ी-सी जमीन खाली पड़ी थी उसे अगर बगीचा कहा जाय तो थोड़ी-बहुत अत्युक्ति हो सकती है। खैर, उस बगीचेमें मुख्य बनस्पति थी—विलायती आमड़ेका एक पेड़।

इस जीवनकी तरक्कीके लिए चारु और अमलने आपसमें एक कमेटी बना ली है। कुछ दिनसे दोनों मिलकर कागजपर नक्शा बनाकर बड़े उत्साहसे इस जमीनपर बगीचेकी कल्पना प्रतिफलित कर रहे हैं।

अमलने कहा—"भाभी, हमारे इस बगीचेमें पुराने जमानेकी राजकुमारीकी तरह तुम्हें अपने हाथसे पेड़ोंको पानी देना पड़ेगा।"

चारुने कहा—"और उस पीछेके कोनेमें एक झोंपड़ी बनानी होगी, जिसमें हिरनके बच्चे रहेंगे।"

अमलने कहा—"और एक छोटी-सी झील बनानी होगी, जिसमें हंस तैरा करेंगे।"

चारुलताने इस प्रस्तावपर उत्साहित होकर कहा—"और उसमें नील-कमल लगाऊँगी, बहुत दिनोंसे मुझे नील-कमल देखनेकी साध है।"

अमल कहने लगा—"उस झीलपर एक पुल बांधा जायगा, और घाटपर छोटी-सी एक नाव बँधी रहा करेगी।"

चारुने कहा—"घाट सफेद संगमरमरका होगा।"

अमलने कागज-पेन्सिल लेकर, रूल खींचकर, 'कम्पास' के सहारे बड़े आडम्बरके साथ बगीचेका एक नक्शा बनाया।

दोनों मिलकर प्रति दिन कल्पनाओंका संशोधन और परिवर्तन करने लगे, और इस तरह बीस-पचीस नये नक्शे तैयार हो गये।

'मैप' बन जानेपर कितना खर्चा होगा, इसका एक 'एस्टिमेट' बनने लगा। पहले तय हुआ था चारु अपने हाथ-खर्चके रुपयोंमें से धीरे-धीरे बगीचा बनवायगी। भूपतिको तो, घरमें कहाँ क्या हो रहा है, कुछ पता ही नहीं रहता। बगीचा बन जानेपर वहाँ पतिको निमन्त्रित करके वह उन्हें अचरजमें डाल देगी। और भूपति सोचेगा—जरूर अलादीनके चिरागको सहायतासे जापान देशसे पूरा बगीचाका बगीचा उड़ा लाया गया है!

मगर 'एस्टिमेट' काफी किफायतसारीके साथ बनाया जानेपर भी चारुको वह पसन्द नहीं आया। उतना वह लायेगी कहाँसे? तब अमलने फिर एक नक्शा बनाया, जिसमें बहुत-कुछ उलट-फेर किया गया।

अमलने कहा—"तो एक काम किया जाय, भाभी, झीलको उड़ा दिया जाय?"

चारुने कहा—"नहीं नहीं, झील उड़ा दोगे तो फिर रहेगा ही क्या! उसमें तो हमारा नील-कमल रहेगा।"

अमलने कहा—"तो फिर हिरनकी कुटियामें टालीकी छत रहने दो, उसे ऐसे ही फूंस-ऊंससे छा देनेसे काम चल जायगा!"

चारुको बड़ा गुस्सा आया, उसने गुस्सेमें ही कहा—"तो रहने दो, मुझे उस घरकी जरूरत नहीं, रहने दो उसे!"

मॉरीशससे लौंग, कर्नाटसे चन्दन और सिंहलसे दालचोनीके पौधे मँगानेका प्रस्ताव था, अमलने उसके बदले मानिकतल्लेके बगीचेसे मामूली

देशो और विलायती पौधे मँगानेके लिए कहा, तो चारु मुँह फुलाकर बैठ गई, बोली—"तो रहने दो, मुझे बगीचा नहीं चाहिए।"

'एस्टिमेट' घटानेका यह तरीका नहीं है। 'एस्टिमेट' के साथ-साथ कल्पनाओंको भी रौंदना चारुके लिए असाध्य है; और अमल मुंहसे चाहे जो कहे, उसे भी यह अच्छा नहीं लगेगा।

अमलने कहा—"तो भाभी, तुम भाई साहबसे बगीचेके बारेमें कहो, वे जरूर रुपये दे देंगे।"

चारुने कहा—"नहीं, उनसे कहनेसे तो मजा ही जाता रहेगा। हम ही दोनों मिलकर बगीचा बनायेंगे। वे तो अंगरेजी कम्पनीको आर्डर देकर 'ईडन गार्डन' बनवा सकते हैं,—तो फिर हमारे प्लानका क्या होगा?"

आमड़ेके पेड़की छाया-तले बैठे हुए दोनों, चारु और अमल, असाध्य संकल्पके कल्पना-सुखमें गोते लगा रहे थे। चारुकी भौजाई मन्दाकिनीने दुमंजिलेसे पुकारकर कहा—"इतनी अबेर हो गई, तुम लोग क्या कर रहे हो बगीचेमें?"

चारु बोली—"पके आमड़े ढूँढ़ रही हूं।"

लुब्धा मन्दाकिनीने कहा—"मिलें तो मेरे लिए भी लेती आना।"

चारु हँसने लगी, अमल भी हँस दिया। उन दोनोंके संकल्पोंमें प्रधान आनन्द और गौरव यह था कि वे उन्हीं दोनोंमें आबद्ध थे। मन्दाकिनीमें और चाहे जो भी गुण हों, पर कल्पना नहीं थी; वह इन सब बातोंमें रस कहाँसे लेती? वह इन दो सदस्योंकी सब तरहकी कमेटीसे बिलकुल न्यारी थी।

असाध्य बगीचेका न तो 'एस्टिमेट' ही घटा, और न कल्पनाने ही किसी अंशमें हार मानी। लिहाजा कुछ दिनों तक आमड़ेके पेड़के नीचे कमेटी बैठती रही। बगीचेमें जहाँ झील बनेगी, जहाँ हिरनकी कुटिया

छवेगी, जहाँ पत्थरकी वेदी बनेगी,—अमलने उन सब स्थानोंपर निशान लगा दिये।

उस बगीचेमें, आमड़ेके पेड़के नीचे किस तरहका चबूतरा बनाया जायगा, अमल उसके चारों तरफ कुदालसे निशाना बना रहा था। इसी समय चारु आकर पेड़की छायामें बैठ गई, बोली—"अमल, तुम्हें अगर लिखना आता तो बहुत अच्छा होता!"

अमलने पूछा—"क्यों अच्छा होता।"

चारु—"तो अपने इस बगीचेका वर्णन कराके तुमसे एक कहानी लिखाती। यह झील, हिरनोंकी कुटिया, आमड़ेका पेड़, सब उसमें रहता, हम दोनोंके सिवा और कोई कुछ समझ ही नहीं पाता, बड़ा मजा होता! अमल, तुम एक दफे लिखनेकी कोशिश करो न, जरूर तुम लिख सकोगे।"

अमल—"अच्छा, अगर लिख सका तो तुम मुझे क्या दोगी?"

चारु—"तुम क्या चाहते हो?"

अमल—"मेरी मशहरीके चँदोएपर मैं पेन्सिलसे लताएँ बना दूंगी, तुम्हें उसपर रेशमका काम कर देना होगा?"

चारु—"यह तो तुम्हारी बहुत ज्यादती है। मशहरीके चँदोएपर कहीं काम होता है!"

मशहरी जैसी चीजको एक सौन्दर्य-हीन कारागार बना रखनेके विरुद्ध अमलने बहुत-सी बातें कहीं। उसने कहा—"दुनियामें पन्द्रह-आना आदमी ऐसे हैं जिन्हें सौन्दर्यका रत्ती-भर भी ज्ञान नहीं और असुन्दरता उन्हें जरा भी नहीं खटकती, यह इस बातका प्रमाण है।"

चारुने उसी वक्त मन-ही-मन यह बात मान ली, और यह जानकर खुश भी हुई कि हम दोनोंकी एकान्त कमेटी उन पन्द्रह-आना आदमियोंसे अलग है।

बोली—"अच्छी बात है, मैं मशहरीका चँदोआ बना दूंगी, तुम लिखो।"

अमलने रहस्यपूर्ण भावसे कहा—"तुम क्या समझती हो कि मैं नहीं लिख सकता?"

चारु अत्यन्त उत्तेजित होकर कहने लगी—"तो जरूर तुमने कुछ लिखा है, मुझे दिखाओ?"

अमल—"आज रहने दो, भाभी।"

चारु—"नहीं, आज ही दिखाना होगा, तुम्हें मेरी सौगंद है, अपनी कापी ले आओ, जाओ।"

चारुको अपनी रचना सुनानेकी तीव्र व्यग्रता ही अमलको अब तक बाधा दे रही थी। कहीं चारुकी समझमें न आया तो, उसे अच्छी न लगी तो? इस संकोचको वह दूर नहीं कर सकता था।

आज कापी लाकर, जरा सुर्ख होकर, जरा खांस-खकारकर उसने पढ़ना शुरू किया। चारु पेड़के तनेके सहारे बैंठकर घासपर पैर पसारे सुनने लगी।

शीर्षक था—'मेरी कापी।'

अमलने लिखा था—"हे मेरी शुभ्र कापी, कल्पनाओंने अभी तक तुम्हारा स्पर्श नहीं किया। सूतिका-गृहमें भाग्यपुरुषके प्रवेश करनेके पहलेके शिशुके ललाटपट्टकी तरह तुम निर्मल हो, तुम रहस्यमयी हो। जिस दिन तुम्हारे अन्तिम पृष्ठकी अन्तिम पंक्तिमें उपसंहार लिखूंगा, वह दिन आज कहां है? तुम्हारे ये शुभ्र शिशुपत्र उस चिरकालके लिए मसी-चिह्नित समाप्तिकी आज स्वप्नमें भी कल्पना नहीं कर रहे।"—इत्यादि बहुत-सा लिखा था।

चारु पेड़को छायामें बैठी स्तब्ध होकर सुन रही थी। पढ़ना खतम होनेपर कुछ देर चुप रहकर बोली—"तुम लिख नहीं सकते, क्यों?"

उस दिन उसी पेड़के नीचे पहले-पहल अमलने साहित्यका मादक-रस पान किया। सङ्गिनी थी नवीना, रसना भी नवीन थी, और तीसरे पहरकी सूर्यरश्मि लम्बी छाया पड़नेसे रहस्यमयी होती जाती थी।

चारुने कहा—"अमल, थोड़े-से आमड़े ले चलने होंगे, नहीं तो मन्दाको कैफियत क्या दूँगी?"

मूढ़ मन्दाके सामने ये सब साहित्यिक आलोचनाकी बातें कहनेकी प्रवृत्ति ही नहीं होती, इसलिए आमड़े तोड़कर ले जाने पड़े।

दूसरा परिच्छेद

बगीचेका सकल्प उनके अन्यान्य अनेक संकल्पोंकी भाँति सीमा-हीन कल्पना-क्षेत्रमें कब खो गया, सो अमल और चारु दोनोंमें से किसीको भी मालूम न हुआ।

अब अमलकी रचनाएँ ही उनकी आलोचना और परामर्शका प्रधान विषय बन गया। अमल आकर कहता—"भाभी, एक बहुत ही उमदा भाव दिमागमें आया है।"

चारु उत्साहित हो उठती, कहती—"चलो, अपने दक्षिणके बरामदेमें, यहाँ अभी मन्दा पान लगाने आयेगी।"

चारु कश्मीरी बरामदेमें एक पुरानी बेंतकी आराम-कुर्सीपर बैठ जाती, और अमल रेलिंगके नीचेवाले ऊँचे हिस्सेपर बैठकर पैर फैला देता।

अमलके लिखनेके विषय अकसर सुनिर्दिष्ट नहीं होते,—लिहाजा स्पष्ट करके कहना उसके लिए कठिन था। गोलमाल करके वह जो कुछ कहता उसे साफ-साफ समझ लेना किसीके भी बूतेकी बात नहीं। अमल खुद ही बार-बार कहा करता—"भाभी, तुम्हें अच्छी तरह समझा नहीं सकता।"

चारु कहती—"नहीं, मैं बहुत-कुछ समझ रही हूं, तुम इसे लिख डालो, देर न करो।"

वह कुछ समझकर और कुछ न समझकर, बहुत-कुछ कल्पना करके और बहुत-कुछ अमलके व्यक्त करनेके आवेगसे उत्तेजित होकर मन-ही-मन न जाने क्या एक चीज बनाकर खड़ी कर लेती कि उसीसे उसे आनन्द मिलता और मारे आग्रहके वह अधीर हो उठती।

चारु उसी दिन शामको पूछती—"कहाँ तक लिख लिया?"

अमल कहता—"इतनी जल्दी कहीं लिखा जा सकता है!"

चारु दूसरे दिन सबेरे जरा-कुछ नाराजीके स्वरमें पूछती—"कहाँ, तुमने उसे लिखा नहीं?"

अमल कहता—"ठहरो, और जरा सोच लेने दो।"

चारु नाराज होकर कहती—"तो रहने दो।"

शामको वही गुस्सा जब इकट्ठा हो-होकर बातचीत बन्द होनेकी नौबत ला देता, तब अमल रूमाल निकालनेके बहाने जेबमें से लिखे हुए कागजका कुछ हिस्सा निकालता।

लहमे-भरमें चारुका मौन भंग हो जाता, वह कह उठती—"वो क्या है, तुमने लिखा तो है,—मुझसे झूठ! दिखाओ?"

अमल कहता—"अभी खतम नहीं हुआ, और थोड़ा-सा लिखके तुम्हें सुनाऊँगा।"

चारु—"नहीं, अभी तुमको सुनाना होगा।"

अमल अभी सुनानेके लिए ही व्यस्त रहता, पर चारुसे कुछ देर तक छीना-झपटी कराये बिना वह सुनाता नहीं। उसके बाद अमल कागज हाथमें लेकर पन्ने ठीक कर लेता, पेन्सिलसे दो-एक संशोधन करता रहता, और तब तक चारु पुलकित कुतूहलसे, जलके भारसे झुके हुए बादलकी तरह, उन कागजोंपर झुकी रहती।

अमल दो-चार पैराग्राफ, जब जितना लिखता, हाल-की-हाल उसे चारुको

सुना देना पड़ता है। बाकी बिना लिखे हुए अंशका आलोचना और कल्पनाके द्वारा मथन होता रहता।

अब तक दोनों जने आकाश-कुसुमके चयनमें नियुक्त थे, अब काव्य-कुसुमको खेती शुरू हो जानेसे दोनों ही और-सब बातें भूल गये।

एक दिन तोसरे पहर अमल कालेजसे लौटा; तो उसकी जेब कुछ ज्यादा भारी-सी मालूम हुई। अमल जब घरमें घुसा, तब चारुने अन्तःपुरकी खिड़कोसे उसकी जेबकी पूर्णता देख ली।

अमल और-और दिन कालेजसे लौटकर घरके भीतर पहुंचनेमें देर न करता था, पर आज वह अपनी भरी जेब लिये बाहरके कमरेमें हो रह गया, जल्दी भीतर जानेका नाम तक न लिया।

चारुने अन्तःपुरके सीमान्त तक आकर कई बार तालियाँ बजाईं, पर किसीने सुना ही नहीं। चारु कुछ नाराज होकर अपने बरामदेमें जा बैठी और मन्मथ दत्तकी एक किताब हाथमें लिये पढ़नेकी कोशिश करने लगी।

मन्मथ दत्त नवोन लेखक है। उसकी लेखन-शैली बहुत-कुछ अमलके ढंगकी है, और इसलिए अमल कभी उसकी प्रशंसा नहीं करता। कभी-कभी चारुके सामने उसकी रचनाविकृत उच्चारणसे पढ़कर व्यंग किया करता, और चारु अमलके हाथसे उस किताबको लेकर अवज्ञाके साथ दूर फेंक दिया करती।

आज, जब उसने अमलके पैरोंको आहट सुनो, तो उसी मन्मथ दत्तकी 'कलकंठ' पुस्तक उसने मुँहके सामने उठाकर अत्यन्त एकाग्र चित्तसे पढ़ना शुरू कर दिया।

अमलने बरामदेमें प्रवेश किया, चारुने उसकी तरफ ध्यान भी न दिया।

अमल बोला—"भाभी, क्या पढ़ा जा रहा है?"

चारुको निरुत्तर देख अमल चौकीके पीछे आकर खड़ा हो गया, और पुस्तक देखी। बोला—"मन्मथ दत्तका 'गलगंड' है?"

चारुने कहा—"ओ:फ़्, परेशान न करो, मुझे पढ़ने दो।"

पीठके पास खड़ा-खड़ा अमल व्यंगके स्वरमें पढ़ने लगा—'मैं तृण हूँ, क्षुद्र तृण ;—भाई रक्ताम्बर राज-वेशधारी अशोक, मैं एक तृण मात्र हूं। मेरे फूल नहीं, मेरे छाया नहीं, अपना मस्तक मैं आकाशमें नहीं उठा सकता, बसन्तकी कोयल मेरा आश्रय लेकर 'कुहू-कुहू' स्वरसे जगतको उन्मत्त नहीं करती,—फिर भी भाई अशोक, तुम अपनी उस पुष्पित उच्च शाखासे मेरी उपेक्षा न करो—तुम्हारे पाँवोंपर पड़ा हूं, मैं तृण हूं, तो भी मुझे तुम तुच्छ न समझो!','

अमल इतना अंश पुस्तकसे पढ़कर उसके बाद अपनी तरफसे बना-बनाकर व्यंगकी ध्वनिमें कहने लगा—"मैं केलोंकी गहर हूं ; भाई कद्दू, भाई गृह-छप्पर-बिहारी कद्दू, मैं नितान्त ही कच्चे केलेकी गहर हूं!"

चारु कौतूहलके मारे गुस्सा न हो सकी, हँसकर उठ बैठी और किताब फेंककर बोली—"तुम बड़े ईर्ष्यालु हो, अपनी रचनाके सिवा और-किसीकी भी कोई चीज तुम्हें पसन्द नहीं आती :"

अमलने कहा—"तुम्हारी बड़ी भारी उदारता है, जो तृण भी मिल जाय तो तुरत निगल जाना चाहती हो!"

चारु—"अच्छा महाशयजी, मजाक करनेकी जरूरत नहीं, जेबमें क्या है, जल्दी निकालिये ?"

अमल—"क्या अन्दाज है तुम्हारा ?"

वहुत देर तक चारुको तंग करके अमलने जेबमें से 'सरोरुह' नामक विख्यात मासिक पत्र निकाला।

चारुने देखा, उस पत्रमें अमलका वह 'मेरी कापी' नामक लेख प्रकाशित हुआ है।

चारु उसे देखकर चुप रही। अमलने सोचा था कि भाभी बहुत खुश होंगी। मगर खुशीका बिशेष कोई लक्षण न देखकर उसने कहा—"सरोरुह' में ऐरू-गैरू लेख नहीं निकलते!"

अमल कुछ ज्यादा कह गया। असलमें, किसी प्रकार चलने लायक लेख हाथ पड़नेपर सम्पादक उसे छोड़ते नहीं। पर अमलने चारुको समझा दिया कि सम्पादक बहुत ही कड़े आदमी हैं, एक सौ लेखोंमेंसे एक लेख छाँट लेते हैं!

सुनकर चारु खुश होनेकी कोशिश करने लगी, लेकिन खुश न हो सकी। किस वजहसे उसके मनमें चोट पहुँची, इसे उसने समझ देखनेकी कोशिश की; पर कोई संगत कारण न निकाल सकी।

अमलकी रचना असलमें अमल और चारु दोनोंकी सम्पत्ति थी। अमल लेखक था और चारु पाठिका। उसकी गोपनता ही उसका प्रधान रस है। उन रचनाको सभी-कोई पढ़ेंगे और बहुतसे लोग उसकी प्रशंसा करेंगे, यह बात चारुको क्यों इतना दुःख दे रही थी, वह अच्छी तरह सकझ न सकी।

परन्तु केवल एक पाठकसे लेखककी आकांक्षा ज्यादा दिनों तक नहीं मिट सकती। अमलने अपनी रचनाओंको छपवाना शुरू कर दिया, और प्रशंसा भी पाई।

बीच-बीचमें भक्तोंकी चिठ्ठी आने लगी। अमल उन्हें अपनी भाभीको दिखाया करता। चारु उससे खुश भी होती और दुःखित भी। अब अमलको लिखनेमें प्रवृत्त करनेके लिये एकमात्र चारुके उत्साह और उत्तेजनकी आवश्यकता नहीं रही। अमलको बीच-बीचमें कभी-कदा नाम-हस्ताक्षर शून्य रमणियोंकी चिट्ठियाँ भी मिलने लगीं। उनके लिए चारु उसका मजाक उड़ाती, पर आराम नहीं पाती। सहसा उनकी कमेटीके बन्द द्वारको खोलकर देशकी पाठक-मण्डली उन दोनोंके बीचमें आ खड़ी हुई!

भूपतिने एक दिन फुरसत मिलनेपर कहा—"हाँ तो चारु, अपना अमल जो इतना अच्छा लिख लेता है, सो तो मुझे नहीं मालूम था!"

भूपतिकी प्रशंसासे चारु खुश हुई। अमल भूपतिका आश्रित है, पर अन्य आश्रितोंसे उसमें पार्थक्य है, यह बात पतिके समझ लेनेसे चारुने मानो गर्वका अनुभव किया। उसके मनका भाव था—अमलको क्यों मैं

इतना स्नेह और आदर करती हूं, सो इतने दिनों बाद तुम लोग समझे; मैं बहुत दिन पहले ही अमलकी मर्यादा समझ गई थी, अमल किसीके लिए भी अवज्ञाका पात्र नहीं।

चारुने पूछा—"तुमने उसके लेख पढ़े हैं?"

भूपतिने कहा—"हां,—नहीं, ठीक पढ़े तो नहीं। समय ही नहीं मिलता। पर अपना निशिकान्त पढ़के खूब तरीफ कर रहा था। वो हिन्दीके लेख अच्छा समझ लेता है।"

चारुकी यह एकान्त इच्छा थी कि भूपतिके मनमें अमलके प्रति एक सम्मानका भाव जाग उठे।

तीसरा परिच्छेद

उमापति भूपतिको उसके अखबारके साथ अन्य पांच तरहके उपहार देनेकी बात समझा रहा था। उपहारसे किस तरह नुकसानसे बच कर लाभ हो सकता है, यह किसी भी तरह भूपतिकी समझमें नहीं आ रहा था

चारु एक बार कमरेमें घुसी और उमापतिको देखकर लौट गई। फिर कुछ देर बाद घूम-फिरकर कमरेमें आई, तो उसने देखा, दोनों जने हिसाबके बारेमें बहस कर रहे हैं।

उमापति चारुको अधैर्य देखकर किसी बहानेसे बाहर चला गया। और भूपति हिसाबमें सर खपाने लगा।

चारुने कमरेके भीतर आकर कहा—"अभी तक शायद तम्हारा काम खतम नहीं हुआ। दिन-रात उसी एक अखबारको लेकर कैसे तुम्हारा समय कटता है, मैं यही सोचती हूं।"

भूपतिने हिसाब हटाकर रख दिया, और जरा मुसकरा दिया। मन ही मन सोचने लगा, वास्तवमें चारुकी तरफ ध्यान देनेका मुझे वक्त ही नहीं

मिलता, बड़ा अन्याय है। उस बेचारोके पास समय बितानेका कुछ जरिया ही नहीं है।

भूपतिने स्नेह-भरे स्वरमें कहा—"आज तुम्हारी पढ़ाई नहीं है? मास्टर साहब शायद भागे हुए हैं? तुम्हारी पाठशालामें सब उलटे नियम हैं। छात्रा पोथी-पत्रा लेकर तैयार है, मास्टरका पता नहीं! आजकल अमल तुम्हें नियमित रूपसे पढ़ाता नहीं मालूम होता है।"

चारुने कहा—"मुझे पढ़ाकर अमलका समय नष्ट करना क्या उचित है? अमलको क्या तुमने एक मामूली प्राइवेट-ट्यूटर समझ रखा है?"

भूपतिने चारुकी कमर पकड़कर अपनी ओर खींचते हुए कहा—"यह क्या मामूली प्राइवेट-ट्यूटरी हो गई? तुम जैसी भाभीको अगर मैं पढ़ा सकता, तो—"

चारु—"ओफ्-होः, तुम अब कुछ कहो मत! पति होनेपर ही यह हाल है, तो और कुछ—"

भूपतिने जरा-कुछ आहत होकर कहा—"अच्छा कलसे मैं तुम्हें जरूर पढ़ाऊंगा।' अपनी किताबें तो जरा ले आओ, क्या तुम पढ़ती हो, जरा देख लूं?"

चारु—"बहुत हो गया, तुम्हें अब पढ़ानेकी जरूरत नहीं। कुछ देरके लिए अपने अखबारका हिसाब जरा रहने दोगे? अभी तुम और किसी तरफ ध्यान दे सकोगे या नहीं, सो बताओ?"

भूपतिने कहा—"जरूर जरूर! इस वक्त तुम मेरे मनको जिस तरफ घुमाना चाहो, घुमा सकती हो।"

चारु—"अच्छी बात है, तो अमलका यह लेख पढ़ देखो, कैसा बढ़िया लिखा है! सम्पादकने अमलको लिखा है, इसलेखको पढ़कर नवगोपालबाबूने उसे भारतका रस्किन बताया है।"

सुनकर भूपतिने कुछ संकुचित-भावसे अखबार हाथमें ले लिया। खोल कर देखा, लेखका नाम है 'असाढ़का चाँद'। गत दो सप्ताहसे भूपति

भारत-सरकारके बजटकी समालोचना करनेके लिए बड़े-बड़े आंकड़े बना रहा था, उसके अङ्क बहुत पैरवाले कीड़ोंकी तरह उसके दिमागके अनेक छिद्रोंमें घूम-फिर रहे थे। ऐसे समयमें सहसा हिन्दी भाषामें लिखे हुए 'असाढ़का चांद' लेख आद्योपान्त पढ़नेके लिए उसका मन तैयार न था। और रचना भी छोटी न थी।

रचनाकी शुरूआत इस तरह थी—"असाढ़का चांद आज क्यों सारी रात बादलोंमें इस तरह छुपा-छुपा फिरता है! मानो स्वर्गलोकसे वह कुछ चुरा लाया हो, मानो अपना कलंक ढकनेके लिए उसे कहीं स्थान न मिल रहा हो। फागुनके महीनेमें जब आकाशके किसी कोनेमें मुट्ठी-भर बादल नहीं थे, तब तो संसारकी आंखोंके सामने वह निर्लज्जकी तरह खुले आकाशमें अपनेको प्रकट किये हुए था — और आज उसकी वही बिखरी हुई हँसी—बच्चेके स्वप्नकी तरह, प्रियाकी स्मृतिकी तरह, सुरेश्वरी शचीके अलक-विलम्बित मुक्ताहारकी तरह--"

भूपतिने सिर खुजाते हुए कहा—" अच्छा लिखा है! पर मुझे क्यों? यह सब कवित्व क्या मैं समझता हूं?"

चारुने संकुचित होकर भूपतिके हाथसे पत्रिका छीन ली, बोली—"तो तुम क्या समझते हो?"

भूपतिने कहा—"मैं इस दुनियाका आदमी हूं;—मैं आदमीको समझता हूं।"

चारुने कहा—"आदमीकी बात क्या साहित्यमें लिखी नहीं जाती?"

भूपति—"गलत लिखी जाती हैं। इसके सिवा आदमी जब कि सशरीर मौजूद है, तो बनावटी बातोंमें उसे ढूंढ़नेकी क्या जरूरत है?"

कहकर चारुलताकी ठोड़ी पकड़कर कहने लगा—"यही, जैसे मैं तुम्हें समझाता हूं, इसके लिए क्या 'मेघनाद-वध' 'कवि-किङ्कण' या 'चण्डीदास' आद्योपान्त पढ़नेकी जरूरत है?"

भूपतिको इस बातका अभिमान था कि वह काव्य नहीं समझता। फिर भी अमलकी रचनापर, अच्छी तरह बगैर पढ़े ही, उसकी श्रद्धा थी। भूपति सोचता, कहनेकी बात कुछ नहीं, फिर भी बना-बनाकर इतनी अनर्गल बातें कह डालना, यह तो मुझसे सिर धुन डालनेपर भी न कही जाती। अमलके भीतर इतनी शक्ति थी, सो कौन जानता था ?

भूपति अपनी रसज्ञताको अस्वीकार करता था। परन्तु साहित्यके प्रति उसकी तरफसे कंजूसी नहीं थी। कोई गरीब लेखक किताब छापनेके लिए उससे सहायता माँगता, तो वह फौरन और उदारताके साथ रुपये दे देता; सिर्फ इतना खास तौरसे कह देता कि 'मुझे समर्पण न की जाय।' हिन्दी भाषाके छोटे–बड़े सभी साप्ताहिक और मासिक पत्र, प्रसिद्ध अप्रसिद्ध, पाठ्य अपाठ्य, सभी तरहकी किताब वह खरीद लिया करता। जिक्र छिड़नेपर कह दिया करता—"एक तो पढ़ता नहीं, उसपर अगर खरीदूं भी नहीं, तो पाप भी लगेगा और प्रायश्चित्त भी न होगा।" वह पढ़ता नहीं था; इसीसे बुरी किताबोंके प्रति उसका रत्ती-भर भी विद्वेष नहीं था। यही वजह है कि उसकी लाइब्रेरी हिन्दी भाषाकी पुस्तकोंसे भरी पड़ी थी।

अमल भूपतिके अंगरेजी प्रूफ देखनेमें सहायता करता था। किसी एक कापीकी दुर्बोध्य लिपि दिखानेके लिए वह कापियोंका एक बंडल लेकर कमरेमें घुसा।

भूपतिने हँसते हुए कहा—"अमल, तुम 'असाढ़के चाँद' और भादोंके पके ताड़पर जितना चाहो लिखो, उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं—मैं किसीकी स्वाधीनतापर हस्तक्षेप नहीं करना चाहता—लेकिन मेरी स्वाधीनता पर क्यों हस्तक्षेप किया जाता है ? उन्हें मुझे बगैर पढ़ाये नहीं छोड़तीं; तुम्हारी भाभीका यह कैसा अत्याचार है ?"

अमलने हँसकर कहा—"यह क्या भाभी, मेरी रचनाओंसे तुम भाई

साहबपर जुल्म करनेकी तरकीब निकाल लोगी, ऐसा जानता तो मैं कुछ लिखता ही नहीं।"

साहित्य-रससे विमुख भूपतिके आगे लाकर उसको अत्यन्त दर्द-भरी रचनाओंका अनादर करानेसे अमल मन-ही-मन चारुपर नाराज हो गया; और चारु भी उसी वक्त इस बातको समझ जानेसे व्यथित हुई। बातको दूसरी तरफ ले जानेके लिए भूपतिसे बोली—"तुम अपने भइयाका ब्याह तो कर दो देखूं, तब फिर लेख-एखका उपद्रव नहीं सहना पड़ेगा।"

भूपतिने कहा—"आजकलके लड़के हमारे जैसे बेवकूफ नहीं हैं! उनका जितना कवित्व है, सब लेखोंमें,—काममें वे खूब सयाने हैं! कहाँ, अपने देवरको तो ब्याहके लिए राजी नहीं करा सकीं?"

चारुके चले जानेपर भूपतिने अमलसे कहा—"अमल, मुझे अपने इस अखबारके झगड़ेमें रहने दो, चारु बेचारी बड़ी अकेली-सी रहती है। कोई काम-धन्धा नहीं, बीच-बीचमें मेरे पास आती है और झाँक-झूंककर चली जाती है। क्या करूं बताओ? तुम उसे जरा पढ़ने-लिखनेमें लगाये रख सको तो अच्छा हो। बीच-बीचमें उसे अंगरेजी काव्योंसे कुछ अनुवाद करके सुनाया करो, तो उपकार भी हो और अच्छा भी लगे। चारुकी साहित्यमें काफी रुचि है।"

अमल बोला—"सो तो ठीक है। भाभी अगर और जरा पढ़-लिख लें, तो मेरा विश्वास है कि वे खुद बहुत अच्छा लिखने लगेंगी।"

भूपतिने हँसकर कहा—"इतनी आशा मैं नहीं करता। पर इतना जरूर है कि चारु हिन्दीकी रचनाओंकी अच्छाई-बुराई मुझसे अधिक समझ सकती है।"

अमल—"उनमें कल्पना-शक्ति काफी है,—स्त्रियोंमें यह बात कम पाई जाती है।"

भूपति—"पुरुषोंमें भी कम पाई जाती है,—इसका सबूत मैं हूँ!

अच्छा, तुम अगर अपनी भाभीको कुछ बना सको, तो मैं तुम्हें इनाम दूँगा।"

अमल—"क्या दोगे, सुनूं तो सही?"

भूपति—"तुम्हारी भाभीकी एक देवरानी कहींसे ढूंढ़-ढकोरके ला दूंगा।"

अमल—"फिर उसे बनानेमें लग जाना पड़ेगा! सारी जिन्दगी क्या बनाने-बनानेमें ही बिता दूंगा?"

दोनों भाई आजकलके युवक हैं, कोई बात कहनेमें सकुचाते नहीं।

चौथा परिच्छेद

पाठक-समाजमें नाम पैदा करके अमलने अब अपना मस्तक ऊंचा कर लिया है। पहले वह स्कूलके लड़केकी तरह रहता था, अब मानो वह समाजका गण्य-मान्य आदमी जैसा हो गया है। बीच-बीचमें साहित्य-सभामें वह निबन्ध पढ़ा करता है,—सम्पादक और सम्पादकके दूत उसके पास आया करते हैं, और उसे निमन्त्रित करके खिलाते-पिलाते भी हैं, नाना सभाओंके सदस्य और सभापति बनानेके लिए लोग उससे अनुरोध किया करते हैं। घरके नौकर-चाकर और आत्मीय-स्वजनोंकी दृष्टिमें उसका सम्मान पहलेसे बहुत-कुछ ऊँचा हो गया है।

मन्दाकिनीने अब तक उसे कोई खास आदमी नहीं समझा। अमल और चारुके हास्यालाप और आलोचनाको लड़कपन समझकर उपेक्षा करके वह पान लगाती और घरका काम-काज किया करती थी। अपनेको वह उन लोगोंसे श्रेष्ठ और गृहस्थीके लिए अधिक आवश्यक समझती थी।

अमलके पान खानेकी कोई हद न थी। मन्दापर पान लगानेका भार होनेसे वह पानोंकी इस फ़िजूल-खर्चीसे नाखुश रहती थी। चारु और अमल षड़यन्त्र करके मन्दाका पानोंका भंडार अकसर लूट लिया करते थे,

और यह उनके मनोविनोदका एक जरिया हो गया। मगर इन शौकीन लुटेरोंका लूट-खसोटका मजाक मन्दाके लिए मनोरंजक न था।

असलमें बात यह है कि एक आश्रित दूसरे आश्रितको प्रसन्न दृष्टिसे नहीं देख सकता। अमलके लिए मन्दाको जितना काम-काज करना पड़ता, उससे मानो वह अपनेको कुछ अपमानित-सी समझती। चारु अमलकी पक्षपातिन थी, इसलिए मुंह खोलकर कुछ कह तो नहीं सकती थी, मगर अमलकी लापरवाही करनेकी कोशिश वह हमेशा किया ही करती थी। और, मौका मिलते ही दास-दासियोंके आगे भी गुप्तरूपसे अमलकी बदनामी करनेसे नहीं चूकती। वे भी उसमें भाग लिया करते थे।

परन्तु जब अमलका अभ्युत्थान आरम्भ हुआ, तो मन्दा चौंकी। अमल अब वह अमल नहीं रहा! अब उसकी संकुचित नम्रता बिलकुल जाती रही है, दूसरोंकी अवज्ञा करनेका अधिकार मानो अब उसीके हाथमें आ गया है। संसारमें प्रतिष्ठा प्राप्त करके जो पुरुष बिना संशयके निःसंकोच भावसे अपनेको जाहिर कर सकता है, जिसने एक निश्चित अधिकार प्राप्त कर लिया है, वह समर्थ पुरुष सहज ही नारीकी दृष्टि आकर्षित कर सकता है। मन्दाने जब देखा कि अमल चारों तरफसे श्रद्धा प्राप्त कर रहा है, तब उसने भी अमलके उच्च मस्तककी ओर मुंह उठाकर देखा। अमलके तरुण चेहरे पर आई हुई नव-गौरवकी गर्वोज्ज्वल दीप्तिने मन्दाकी आँखोंमें एक तरहका मोह पैदा कर दिया, उसने अमलको मानो नई तरहसे देखा।

अब किसीको पान चुरानेकी जरूरत नहीं पड़ती। अमलके ख्याति-लाभसे चारुको इतना और नुकसान हुआ। उन दोनों का षड़यंत्रका कौतुक-बन्धन विच्छिन्न हो गया। पान अब अमलके आगे अपने-ही-आप पहुंचने लगे, कोई कमी नहीं रही।

इसके सिवा, उन दोनोंके गठित दलमें जो मन्दाकिनीको नाना कौशलोंसे दूर रखनेका आनन्द था, उसके भी नष्ट होनेकी नौबत आ पहुंची। मन्दाको

अलग रखना कठिन हो गया। अमल सिर्फ चारुको ही अपनी एकमात्र साथिन और समझदार समझे, यह बात मन्दाको अच्छी नहीं लगने लगी। इसके पहले, उन दोनोंकी तरफसे की जानेवाली उपेक्षाका अब वह मय सूदके बदला लेना चाहती है। लिहाजा, अमल और चारुकी भेंट-मुलाकात होते ही अब वह बीचमें अपनी छाया डालकर ग्रहण लगा देती है। सहसा मन्दाके इस परिवर्तनसे चारु और अमलको हास्य-परिहार करनेका मौका मिलना भी दुश्वार हो गया।

मन्दाका यह अनाहूत प्रवेश चारुको जितना अरुचिकर मालूम हुआ अमलको शायद उतना न भी मालूम हो। विमुख रमणीका मन क्रमशः उसकी तरफ झुक रहा है, यह जानकर भीतर-ही-भीतर वह एक तरहका आग्रह अनुभव करने लगा।

परन्तु चारु जब दूरसे मन्दाको देखकर तीव्र मृदुस्वरसे कहती—"वो आ रही हैं!" तब अमल भी कह देता—"आ गईं क्या, परेशान कर डाला!" संसारके और सबोंके प्रति असहिष्णुता प्रकट करना उनका एक दस्तूर-सा था, अमल उसे अचानक कैसे छोड़ देता! अन्तमें मन्दाकिनी जब पास आ जाती, तब मानो जबरदस्ती सौजन्य दिखानेके लिए वह कहता—"क्या खबर है, मन्दा-भाभी? आज अपने पानदानमें चोरी-डकैतीके कोई लक्षण देखे?"

मन्दा—"जब कि चाहते ही पा जाते हो, लालाजी, तो चुरानेकी क्या जरूरत?"

अमल—"माँगकर पानेकी अपेक्षा उसमें आनन्द जो ज्यादा है!"

मन्दा—"तुम लोग क्या पढ़ रहे थे, पढ़ो न! रुक क्यों गये? सुननेमें मुझे अच्छा लगता है।"

इससे पहले मन्दाको पाठानुरागके लिए ख्याति प्राप्त करनेकी गरज कतई नहीं थी, परन्तु "कालोहि बलवत्तरः!"

चारुकी इच्छा नहीं थी कि अरसिका मन्दाके सामने अमल कुछ पढ़े, और अमलकी इच्छा थी कि मन्दा भी उसकी रचना सुने।

चारु—"अमलने 'कमलाकान्तके दफ्तर' की समालोचना लिखी है, सो क्या तुम्हारी समझमें—"

मन्दा—"अरे मूरख ही सही,—फिर भी क्या बिलकुल समझ ही नहीं सकती?"

तब, और-एक दिनकी बात अमलको याद आ गई। चारु और मन्दा ताश खेल रही थीं, अमल अपनी रचना हाथमें लिये हुए खेल-सभामें दाखिल हुआ। चारुको अपनी रचना सुनानेके लिए वह अधीर हो रहा था, खेल खतम न होते देख वह मन-ही-मन गुस्सा होने लगा। अन्तमें उसने कहा—"तो तुम लोग खेलती रहो भाभी, मैं अखिल-बाबूको जाकर अपनी रचना सुना आऊँ!"

चारुने अमलका दुपट्टा दबा लिया, बोली—"उफ्, बैठो न जरा, कहाँ जाते हो?"—कहकर झटपट हारकर उसने खेल खतम कर दिया।"

मन्दाने कहा—"तुम पढ़ना शुरू करोगे शायद, तो मैं उठूं?"

चारुने शराफत दिखाकर कहा—"क्यों, तुम भी सुनो न, भाभी!"

मन्दा—"नहीं बहन, मैं तुम लोगोंका पढ़ना खाक-पत्थर कुछ समझती ही नहीं—मुझे तो नींद आने लगती है!"—कहकर वह असमयमें खेल खतम हो जानेसे दोनोंपर बहुत ही नाराज होकर उठ गई।

वही मन्दा आज 'कमलाकान्त' की समालोचना सुननेके लिए उत्सुक है! अमलने कहा—"यह तो बड़ी खुशीकी बात है भाभी, तुम सुनोगी, यह तो मेरा सौभाग्य है!"—कहकर पन्ने उलटकर पढ़नेकी तैयारी की। रचनाके आरम्भमें उसने काफी रस उँड़ेला था, उतना हिस्सा छोड़ देनेको उसका जी नहीं चाहा।

चारु जल्दीसे कह उठी—"लालाजी, तुमने तो कहा था कि

जाह्नवी-लाइब्रेरीसे कुछ पुराने मासिक पत्र ला दोगे ?"

अमल—"आज नहीं।"

चारु—"आज ही तो! खूब रहे, भूल गये, क्यों ?"

अमल—"भूल क्यों जाऊंगा ? तुम्हींने तो कहा था—"

चारु—"अच्छा-अच्छा, मत लाओ! तुमलोग पढ़ो,—मैं जाती हू, पारसको लाइब्रेरी भेज दूं जाकर।"—कहकर चारु उठ गई।

अमलको विपत्तिकी आशंका हुई। मन्दा मन-ही-मन समझ गई, और दूसरे ही क्षण चारुके प्रति उसका मन विषाक्त हो उठा। चारुके चले जानेपर अमल जब 'उठे या नहीं' सोचकर बगलें झाँक रहा था, मन्दाने जरा कुछ हँसकर कहा,—"जाओ भाई, रूठी भाभीको मनाओ—चारु गुस्सा हो गई है! मुझे लेख सुनाकर परेशानीमें पड़ोगे!"

इसके बाद अमलके लिए उठना बहुत ही मुश्किल हो गया। अमलने चारुसे जरा रुष्ट होकर कहा—"क्यों, परेशानी काहेकी!"—कहकर पन्ना फैलाकर पढ़नेकी तैयारी की।

मन्दाने दोनों हाथोंसे उसकी कापी ढककर कहा—"जरूरत नहो भइया, मत पढ़ो।"

कहकर, मानो वह आँसू रोकती हुई अन्यत्र चली गई।

पाँचवाँ परिच्छेद

चारु न्योता खाने गई थी। मन्दाकिनो घरमें बैठी जूड़ा बांध रही थी। "भाभी"—कहता हुआ अमल भीतर चला आया। मन्दाकिनी निश्चित जानती थी कि चारुके न्योतेमें जानेकी बात अमल जानता ही होगा, वह हँसकर बोली—"अहा, अमल-बाबू, किसकी खोजमें आये थे और किससे भेंट हो गई ? तुम्हारी तकदीर ही ऐसी है!"

अमलने कहा—"जैसी घास बाईं तरफकी, वैसी दाहिनी तरफकी,—गधेके लिए दोनों सामन आदरणीय हैं!"—कहकर वहीं बैठ गया।

अमल—"मन्दा-भाभी, तुम अपने देशकी कहानी कहो, मैं सुनूंगा?"

लिखनेका विषय चुननेके लिए अमल सबकी सब बातें दिलचस्पीके साथ सुना करता है। इसलिए मन्दाकी अब वह पहलेकी तरह उपेक्षा नहीं करता। मन्दाका मनस्तत्व, मन्दाका इतिहास अब उसके लिए औत्सुक्य-जनक है। कहाँ उसकी जन्मभूमि है, कैसे जीवन बीता है, कब ब्याह हुआ था, इत्यादि सभी बातें वह ढूंढ़-ढूंढ़कर पूछने लगा। मन्दाके क्षुद्र जीवन-वृत्तान्तके सम्बन्धमें उसे इतना कुतूहल क्यों है, यह बात उसने प्रकट नहीं की; और मन्दा आनन्दसे अपनी बातें बकती ही चली जाने लगी। बीच-बीचमें कह देती—"क्या बक रही हूं, कोई ठीक नहीं!"

अमलने—उत्साह देते हुए कहा—"नहीं, मुझे अच्छा लग रहा है, कहती जाओ!"

मन्दाके बापके यहाँ एक गुमश्ता था, वह अपनी दूसरी स्त्रीके साथ झगड़ा करके किसी-किसी दिन रूठकर अनशन व्रत ग्रहण किया करता था। अन्तमें भूखके मारे तंग आकर, मन्दाके घर किस तरह छिपकर खाने आता था और अचानक एक दिन स्त्रीने उसे कैसे पकड़ लिया, यह किस्सा चल रहा था और अमल दिलचस्पीके साथ सुनते-सुनते सकौतुक हँस रहा था; इतनेमें चारुने कमरेमें प्रवेश किया।

कहानीका सिलसिला टूट गया। उसके आगमनसे सहसा एक जमी हुई सभा भंग हो गई, और चारुको यह स्पष्ट भास गया।

अमलने पूछा—"भाभी, इतनी जल्द लौट आईं जो?"

चारुने कहा—"हूँ, बात तो ठीक है! बहुत जल्दी लौट आई!"—कहकर जाने लगी।

अमलने कहा—"अच्छा ही किया, बचा लिया मुझे। मैंने तो सोचा जाने कब लौटोगी! मन्मथ दत्तकी 'शामकी चिड़िया' नई पुस्तक निकली है, तुम्हें सुनानेके लिए लाया हूं।"

चारु—"अभी रहने दो, मुझे काम है।"

अमल—"काम हो तो मुझे हुक्म दो, मैं किये देता हूं?"

चारु जानती थी कि अमल आज किताब खरीद लायेगा और उसे सुनायेगा। चारु अमलके मनमें ईर्षा पैदा करनेके लिए उसकी खूब प्रशंसा करती जायगी और अमल उस किताबको विकृत करके पढ़कर उसका मजाक उड़ाता जायगा। इन्हीं सब बातोंकी कल्पना करके, वह, अधैर्यवश निमन्त्रणकारियोंके अनुनय-विनयकी परवाह न कर तबीयत खराबका बहाना करके असमयमें घर लौट आई है। अब उसे बार-बार ऐसा मालूम होने लगा कि वहां बड़े मजेमें थी, वहांसे चला आना अन्याय हुआ।

मन्दा भी तो कुछ कम बेहया नहीं! एक घरमें अकेली बैठी अमलके साथ दांत निकालकर हँस रही है! लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे? परन्तु इस बातपर मन्दाको फटकारना चारुके लिए बहुत कठिन था। कारण, मन्दा भी अगर ठीक वैसा ही दृष्टान्त देकर जवाब दे? मगर वह दूसरी बात है, और यह दूसरी। वह अमलको लिखनेमें उत्साह देती है, अमलके साथ साहित्यिक आलोचना करती है; किन्तु मन्दाका तो यह उद्देश्य कतई हो ही नहीं सकता। मन्दा निःसन्देह इस सरल-हृदय युवकको मुग्ध करनेके लिए जाल बिछा रही है। इस भयानक विपत्तिसे अमलकी रक्षा करना तो उसीका कर्तव्य है। अमलको इस मायाविनीका भीतरी अभिप्राय कैसे समझावे? समझानेसे उसका प्रलोभन निवृत्त न होकर कहीं उलटा बढ़ गया तो?

और भइया बेचारे? वे उसके पतिके अखबारके लिए हो दिन-रात मेहनत करते-करते मरे जा रहे हैं, और मन्दाका यह हाल है कि एक

कोनेमें बैठी अमलको लुभानेकी सोच रही है! भइया तो बिलकुल निश्चिन्त हैं। मन्दापर उनका अथाह विश्वास है। इन सब बातोंको अपनी आँखोंसे देखकर चारु कैसे स्थिर रह सकती है? बड़ा अन्याय है यह।

पर, पहले तो अमल अच्छा था,—जबसे लिखना शुरू करके नाम पैदा किया है, तभीसे ये सब अनर्थ दिखाई देने लगे हैं। चारु ही तो उसके लिखनेमें जड़ है। बुरे क्षणमें उसने अमलको लिखनेमें उत्साह दिया था। अब क्या अमलपर उसका पहलेकी तरह जोर चलेगा? अमलको अब और-भी पाँच जनोंके आदरका जायका मिल गया है, इसलिए एकके घट जानेसे उसका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं।

चारु साफ समझ गई कि उसके हाथसे निकलकर पाँच जनोंके हाथमें पड़कर अमल बड़ी आफतमें फँस गया है। चारुको अब वह ठीक अपना समकक्ष नहीं समझता। चारुसे वह आगे बढ़ गया है। अब वह लेखक है और चारु पाठक। इसका प्रतिकार करना ही होगा।

ओह, सरल अमल, मायाविनी मन्दा, और बेचारे भइया!

छठा परिच्छेद

उस दिन आषाढ़के नवीन मेघोंसे आकाश आच्छन्न हो रहा था। कमरेमें अन्धकार घनीभूत हो जानेसे चारु अपनी खुली खिड़कीके पास बिलकुल झुककर कुछ लिख रही थी।

अमल कब दबे-पाँव पीछेसे आकर खड़ा हो गया, उसे मालूम नहीं हुआ। बदलीके स्निग्ध प्रकाशमें चारु लिखती गई और अमल पढ़ता गया। उसके सामने अमलकी ही लिखी हुई दो-एक छपी हुई रचनाएँ खुली पड़ी हैं; चारुके लिए वे ही एकमात्र रचनाका आदर्श थीं।

"तुम तो कहा करती थीं कि लिखना आता ही नहीं!"—सहसा

अमलका स्वर सुनकर चारु एकाएक चौंक पड़ी, झटपट उसने कापी दुबका ली, बोली—"तुम्हारा यह भारी अन्याय है !"

अमल—"अन्याय क्या किया ?"

चारु—"छिपे-छिपे देख क्यों रहे थे ?"

अमल—"प्रकट रूपसे देख नहीं पाता इसलिए ।"

चारु अपनी रचना फाड़ फेंकना चाहती थी। अमलने चटसे उसके हाथसे कापी छीन ली। चारुने कहा—"अगर तुम पढ़ोगे, तो तुमसे मेरी जिन्दगी-भरके लिए अुट्टी हो जायगी ।"

अमल—"अगर पढ़नेकी मनाही करोगी, तो तुमसे मेरी जनम-भरके लिए अुट्टी हो जायगी ।"

चारु—"मेरे सरकी कसम है लालाजी, पढ़ना मत !"

अन्तमें चारुको ही हार माननी पड़ी। कारण अमलको अपनी रचना दिखानेके लिए भीतरसे उसका जी फड़फड़ा रहा था। किन्तु दिखाते वक्त उसे इतनी शरम आयेगी, यह उसने नहीं सोचा था। अमलने जब बहुत अनुनय करनेके बाद पढ़ना शुरू किया, तो चारुके हाथ-पैर बरफ-से ठंढे पड़ गये। बोली—"मैं जरा पान ले आऊं।"—कहकर चटसे वह बगलके कमरेमें पान लगाने चली गई।

अमल पढ़ना खतम करके चारुसे जाकर बोला—"बहुत अच्छा लिखा है ।"

चारु पानपर कत्था लगाना भूल गई, कहने लगी—"चलो रहने दो, मजाक उड़ानेकी जरूरत नहीं। दो, मेरी कापी दो ।"

अमल—"कापी अभी नहीं दूँगा, नकल करके इसे छपने भेजूँगा ।"

चारु—"हाँ, छपने तो जरूर भेजोगे ! सो नहीं होनेका ।"

चारु बहुत गड़बड़ करने लगी। अमलने भी किसी तरह पीछा नहीं छोड़ा। उसने जब बार-बार कसम खाकर कहा, 'अखबारमें भेजने लायक

है', तब चारुने मानो बिलकुल निराश होकर कहा—"तुमसे मैं जीत थोड़े ही सकती हूँ! जिस बातको मनमें ठान लोगे, उसे बगैर पूरा किये नहीं छोड़ोगे।"

अमलने कहा—"भइयाको एक बार दिखाना होगा।"

सुनकर, चारु पान लगाना छोड़कर जल्दीसे उठ खड़ी हुई, और कापी छीननेकी कोशिश करती हुई बोली—"नहीं, उन्हें नहीं सुना सकते! उनसे अगर मेरे लेख लिखनेकी बात कहोगे, तो मैं फिर एक अक्षर भी न लिखूंगी।"

अमल—"भाभी, तुम बड़ी-भारी गलती कर रही हो। भइया मुंहसे चाहे जो भी कहें, तुम्हारी रचना देखकर बहुत खुश होंगे।"

चारु—"होने दो, मुझे खुशीकी जरूरत नहीं।"

चारु प्रतिज्ञा किये बैठी थी कि वह लिखेगी और अमलको आश्चर्य-चकित कर देगी। मन्दा और उसमें कितना अन्तर है, इस बातको प्रमाणित किये बगैर वह न मानेगी। पिछले कई दिनोंमें उसने बहुत लिखा है और फाड़-फाड़कर फेंक दिया है। उसने जो भी लिखना शुरू किया, वह बिलकुल अमल सरीखा हो गया। मिलाकर देखा तो कहीं-कहीं बिलकुल अमलकी रचनाकी नक़ल-सी ही मालूम हुई; और वही अंश अच्छे हुए, बाकीके मामूली। देखकर जरूर अमल मन-ही-मन हँसेगा, इस बातकी कल्पना करके चारुने टुकड़े-टुकड़े करके उन सबको तालाबमें फेंक दिया,—कहीं एक-आध टुकड़ा अमलके हाथ न लग जाय।

पहले उसने लिखा था, "सावनकी बदली"। सोचा था, भावाश्रु-जलसे अभिषिक्त एक बहुत अच्छी रचना लिख डाली। सहसा होश आया कि वह तो अमलके "अषाढ़के चाँद" का दूसरा पहलू है। अमलने लिखा है, "भाई चांद, तुम बादलोंमें चोरकी तरह छुपे-छुपे क्यों फिरते हो?" चारुने लिखा था, "सखी कादम्बिनी, सहसा तुम कहाँसे आकर अपने नील

अंचलके नीचे चाँदकी चोरी करके भागी जा रही हो?" इत्यादि।

जब किसी भी तरह वह अमलकी शैलीको न छोड़ सकी, तो उसने लिखनेका विषय बदल दिया। चाँद, मेघ, शेफालिका इन सबको छोड़कर उसने "देवीके मन्दिरमें" शीर्षक एक लेख लिखा। उसके पीहरमें वृक्षोंकी छायासे अन्धकारमय तलाबके किनारे कालीका मन्दिर था—उस मन्दिरके विषयमें बचपनकी कल्पना, भय और उत्सुकता लिये हुए उसकी विचित्र स्मृति थी, उस जाग्रत देवीके माहात्म्यके सम्बन्धमें गाँवमें चिर-प्रचलित प्राचीन किम्बदन्तियाँ थीं—उन्हींको लेकर उसने एक रचना लिख डाली। उसका प्रारम्भिक भाग अमलकी शैलीपर काव्याडम्बर-पूर्ण था, पर कुछ आगे चलकर यह अपने-आप ही सरल और गाँवकी भाषा-भंगिमा और आभाससे भर गई।

वही रचना अमलने छीन ली! उसे मालूम हुआ, शुरूका भाग बहुत अच्छा हुआ है, पर अन्त तक कवित्वकी रक्षा नहीं हुई। कुछ भी हो, प्रथम रचनाके लिहाजसे लेखिकाका उद्यम प्रशंसनीय है।

चारुने कहा—"लालाजी, हम दोनों मिलकर एक मासिक पत्र निकालें, तो कैसा हो?"

अमल—"बहुतसे रौप्यचन्द्रके बिना पत्र चलेगा कैसे?"

चारु—"हमारे इस पत्रमें कोई खर्च नहीं। छपेगा थोड़े ही, हाथका लिखा होगा, उसमें हमारे-तुम्हारे सिवा और किसीका लेख नहीं निकलेगा, और न किसीको पढ़ने ही दिया जायगा। सिर्फ दो प्रति निकलेंगी—एक तुम्हारे लिए, एक मेरे लिए।"

कुछ दिन पहले यह बात होती, तो अमल मारे खुशीके उछल पड़ता पर अब गोपनताका उत्साह उसका जाता रहा। अब बिना दस-बीसको सामने रखे लिखनेमें उसे आनन्द ही नहीं आता। फिर भी पुराना ठाठ कायम रखनेके लिए उसने उत्साह दिखाया। बोला—"बड़ा मजा रहेगा!"

चारुने कहा—"मगर प्रतिज्ञा करनी होगी, अपने पत्रके सिवा और कहीं भी तुम लेख प्रकाशित नहीं करा सकते !"

अमल—"तब तो सम्पादक लोग मुझे मार ही डालेंगे।"

चारु—"और मेरे हाथमें शायद मारनेका कोई अस्त्र ही नहीं है ?"

बात तय हो गई। दोनों सम्पादक, दोनों लेखक और दोनों पाठकोंकी कमेटी बैठी। अमलने कहा—"पत्रका नाम रखा जाय 'चारुपाठ'।"

चारुने कहा—"नहीं, उसका नाम होगा 'अमला'।"

इस नई व्यवस्थासे चारु बीचके कुछ दिनोंका दुःख भूल गई। उनके मासिक-पत्रमें मन्दाके घुसनेका कोई रास्ता ही नहीं ; और बाहरवालोंके लिए भी रास्ता बन्द है।

सातवाँ परिच्छेद

भूपतिने एक दिन आकर कहा—"चारु, तुम लेखिका हो जाओगी, ऐसी तो कभी कोई बात हुई नहीं थी !"

चारु चौंककर लाल हो गई, बोली—"मैं लेखिका ! किसने कहा तुमसे ? हरगिज नहीं।"

भूपति—"माल समेत गिरफ्तार हो गई हो ! सबूत हाथों-हाथ लो !"—कहकर भूपतिने 'सरोरुह' का वह अङ्क निकालकर दिखाया। चारु देखा, जिन लेखोंको वह अपनी गुप्त सम्पत्ति समझकर अपने हस्त-लिखित मासिक-पत्रमें संचित कर रही थी, वे ही लेख मय लेखक-लेखिकाके नामके साथ 'सरोरुह' में छाप दिये गये हैं !

उसे मालूम हुआ, मानो किसीने उसके पिंजड़ेकी बड़े जतनसे पाली हुई चिड़ियोंको, दरवाजा खोलकर, उड़ा दिया है। भूपतिके सामने पकड़े

जानेकी लज्जाको भूलकर वह विश्वासघाती अमलपर मन-ही-मन बहुत नाराज होने लगी।

"और यह देखो!"—कहते हुए भूपतिने चारुके सामने 'विश्वबन्धु' पत्र खोलकर रख दिया, उसमें 'आजकलकी हिन्दी लिखनेकी शैली' शीर्षक एक लेख निकला है।

चारुने उसे हाथसे अलग हटाते हुए कहा—"इसका मैं क्या करूंगी!" तब अमलपर उसे इतना गुस्सा आ रहा था कि मारे अभिमानके वह दूसरी तरफ मन ही नहीं दे सकती थी। भूपतिने जोर देकर कहा—"एक बार पढ़कर तो देखो!"

चारुको उसपर आँखें फेरनी ही पड़ीं। आधुनिक किसी-किसी श्रेणीके लेखकोंके भावाडम्बरसे भरे हुए गद्यकी निन्दा करते हुए लेखकने बड़ा कड़ा लेख लिखा है। उसमें समालोचकने मन्मथ दत्तकी लेखनशैलीका बहुत जोरका मजाक उड़ाया है; और उसके साथ ही तुलना करते हुए नवीना लेखिका श्रीमती चारुबालाकी भाषाकी अकृत्रिम सरलता, अनायास सरसता और चित्र-रचनाकी निपुणताकी बहुत प्रशंशा की है। लिखा है—'ऐसी रचना-शैलीका अनुकरण करके सफलता प्राप्त कर सकें, तभी अमल-कम्पनीका उद्धार हो सकता है, अन्यथा वह बिलकुल फेल हो जायगी, इसमें कोई सन्देह नहीं।'

भूपतिने हँसकर कहा—"इसका नाम है गुरु-मार विद्या!"

चारु अपनी रचनाओंकी इस प्रशंसासे जब-जब प्रसन्न होनेको तैयार हुई, तब-तब वह सहसा व्यथित होने लगी। प्रसन्नता उसके मनमें मानो किसी कदर आना ही नहीं चाहती। प्रशंसाका लोभनीय सुधा-पात्र ज्यों ही उसके ओठों तक पहुंचता, त्यों ही चटसे वह उसे धकेलकर अलग कर देने लगी।

चारुने समझा कि उसकी रचनाएँ पत्रोंमें छपवाकर अमलने सहसा

उसे विस्मित कर देनेका संकल्प किया होगा। अन्तमें छप जानेके बाद उसने तय किया होगा कि किसी पत्रमें प्रशंसापूर्ण आलोचना निकले तो दोनों एक साथ दिखाकर चारुका रोष ठंडा और उत्साह गरम कर देगा। मगर जब प्रशंसा निकली तो अमल उसे आग्रहके साथ दिखाने क्यों नहीं आया? इस समालोचनासे अमलको चोट पहुँची होगी, और चारुको दिखाना नहीं चाहता, इसीलिए इन पत्रोंको वह छिपा गया है। चारुने अपने आरामके लिए अत्यन्त एकान्तमें जो एक साहित्य-नीड़ बनाया था, सहसा प्रशंसाकी शिला-वृष्टिका एक बड़ा-सा ओला पड़ते ही उसके स्खलित होकर नीचे गिर पड़नेकी नौबत आ पहुँची। चारुको यह बिलकुल ही अच्छा नहीं लगा।

भूपतिके चले जानेपर चारु अपने सोनेके कमरेमें जाकर चुपचाप पलंगपर जा बैठी—सामने उसके 'सरोरुह' और 'विश्वबन्धु' खुले पड़े थे।

अमलने कापी हाथमें लिये हुए, सहसा चारुको चौंका देनेके ख्यालसे, दबे-पाँव पीछेसे प्रवेश किया। पास आकर देखा तो, सामने 'विश्वबन्धु' की समालोचना खोले चारु निमग्न चित्तसे बैठी है।

अमल जैसे आया था, वैसे ही दबे-पाँव बाहर निकल गया। मेरी निन्दा करके चारुकी शैलीकी प्रशंसा की है, सो चारुको ऐसी खुशी कि बाहरका कुछ होश-हवास तक नहीं! क्षण-भरमें उसका सम्पूर्ण चित्त मानो कड़ुआ-सा हो गया। चारु एक मूर्खकी समालोचना पढ़के अपनेको गुरुसे भी बढ़कर समझने लगी है, इस बातका निश्चय करके अमल चारुपर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा। चारुको चाहिये था कि उस अखबारके टुकड़े-टुकड़े कर डालती और आगमें जलाकर भस्म कर देती।

चारुपर गुस्सा होकर अमल मन्दाके कमरेके सामने पहुँचा; और पुकारा—"मन्दा-भाभी!"

मन्दा—"आओ लालाजी, बिना माँगे ही दर्शन पा गई! आज मेरी तकदीर बुलन्द है!"

अमल—"मेरी दो-एक नई रचनाएँ हैं, सुनोगी क्या ?"

मन्दा—"कितने दिनोंसे 'सुनाऊंगा, सुनाऊंगा' करके आशा देते आ रहे हो, पर सुनाते कहाँ हो ? जरूरत नहीं भइया, फिर कहीं कोई गुस्सा हो गई, तो तुम्हारी ही आफत है,—मेरा क्या है ?"

अमलने जरा-कुछ तीखे स्वरमें कहा—"गुस्सा कौन होगी ? क्यों गुस्सा होगी ? अच्छा, जो होगा सो देखा जायगा, तुम अभी सुनो तो सही !"

मन्दा मानो अत्यन्त आग्रहके साथ जल्दीसे संयत होकर बैठ गई। अमलने सुरीली आवाजमें समारोहके साथ पढ़ना शुरू किया।

अमलकी रचना मन्दाके लिए बिलकुल ही विदेशी ठहरी, उसमें कहीं भी उसे कोई किनारा नहीं सुझाई दिया। और इसीलिए वह अपने सारे चेहरेपर आनन्दकी हँसी लाकर अतिरिक्त व्यग्रताके साथ सुनने लगी। उत्साहसे अमलका कण्ठ उत्तरोत्तर ऊंचा होने लगा।

वह पढ़ने लगा—"अभिमन्युने जैसे गर्भावस्थामें सिर्फ व्यूहमें प्रवेश करना ही सीखा था, निकलना नहीं सीखा, उसी तरह नदीके स्रोतने गिरि-कन्दराके पाषाण-जठरमें रहकर केवल सामने ही चलना सीखा है, पीछे लौटना नहीं सीखा। हाय रे नदीका स्रोत, हाय रे यौवन, हाय रे काल, हाय रे संसार, तुम सब-के-सब सिर्फ सामने ही चल सकते हो,—जिस मार्गमें स्मृतिके स्वर्ण-मण्डित कंकड़ बखेर आते हो, उस मार्गसे फिर कभी कदम ही नहीं रखते ! आदमीका मन ही सिर्फ पीछेकी ओर देखा करता है, अनन्त जगत्-संसार उस तरफ मुड़कर देखता भी नहीं !"—

इसी समय मन्दाके दरवाजेके पास एक छाया दिखाई दी, उस छायाको मन्दाने देख लिया। पर ऐसे ढंगसे जैसे देखा ही न हो, वह अनिमेष-दृष्टिसे अमलके मुंहकी ओर देखती हुई स्थिर मनोयोगके साथ उसका पढ़ना सुनने लगी।

छाया उसी वक्त वहाँसे हट गई।

चारु प्रतीक्षा कर रही थी कि अमलके आनेपर उसके सामने वह 'विश्वबन्धु' पत्रको यथोचित लांछित करेगी, और प्रतिज्ञा भंग करके अमलने जो उसकी रचना बाहरके मासिक पत्रमें प्रकाशित कराई हैं, इसके लिए उसे फटकार बतायेगी।

अमलके आनेका समय निकल गया, फिर भी उसका पता नहीं। चारुने एक लेख लिखकर तैयार कर रखा है, अमलको सुनानेकी इच्छा है, वह भी पड़ा है।

इसी समय कहींसे उसे अमलकी आवाज सुनाई दी। मन्दाके घरसे! वाणसे बिंधी हुई-सी वह उठ खड़ी हुई। दबे-पाँव वह मन्दाके दरवाजेके पास जाकर खड़ी हो गई। अमल जो लेख मन्दाको सुना रहा था, उसे चारुने अभी तक सुना ही नहीं। अमल पढ़ रहा था—'आदमीका मन ही सिर्फ पीछेकी ओर देखा करता है, अनन्त जगत्-संसार उस तरफ मुड़कर देखता भी नहीं।'

चारु जैसे दबे-पाँव आई थी वैसे चुपके-से जा न सकी। आज एकके बाद एक-दो-तीन आघातोंने उसे बिलकुल धैर्यच्युत कर दिया। मन्दा एक अक्षर भी समझ नहीं रही और अमल बिलकुल निर्बोध मूढ़की तरह उसे अपनी रचना सुनाकर तृप्त हो रहा है, यह बात जोरसे चिल्लाकर कह आनेकी उसकी इच्छा हुई। पर मुंहसे कह न सकनेके कारण, मारे क्रोधके, पैरोंकी आवाजसे उसे प्रकट कर आई। अपने शयन-गृहमें प्रवेश करके उसने जोरसे, आवाजके साथ, किवाड़ बन्द कर लिये।

अमलने क्षण-भरके लिए पढ़ना स्थगित कर दिया। मन्दाने हँसकर चारुकी तरफ इशारा किया। अमलने मन-ही-मन कहा—'भाभीकी कैसी ज्यादती है! उन्होंने क्या यह तय कर लिया है कि मैं उन्हींका खरीदा हुआ गुलाम हूं! उनके सिवा और किसीको भी अपनी रचना नहीं सुना

सकता ! यह तो बड़ा-भारी जुल्म है।'—यह सोचकर वह और भी ऊंचे स्वरसे पढ़कर मन्दाको सुनाने लगा।

पढ़ना खतम हो जानेपर अमल चारुके कमरेके सामनेसे निकल गया। एक बार सिर्फ देख-भर लिया कि चारुका दरवाजा बन्द है।

चारुने पैरोंकी आहटसे समझ लिया कि अमल उसके कमरेके सामनेसे चला जा रहा है। एक बार रुका तक नहीं ! क्रोध और क्षोभसे उसे रुआई नहीं आई। अपने नये लेखोंकी कापी निकालकर, उसका प्रत्येक पन्ना फाड़-फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करके ढेर लगा दिया। हाय, किस कुमुहूर्तमें यह लिखना-पढ़ना शुरू हुआ था।

आठवाँ परिच्छेद

शामके वक्त, बरामदेके टबसे जुहीकी खूशबू आ रही थी। बिखरे हुए बादलोंके भीतरसे स्निग्ध आकाशमें तारे दिखाई दे रहे थे। आज चारुने बाल नहीं संवारे, कपड़े भी नहीं बदले। खिड़कीके पास अंधेरेमें बैठी है, मृदु-मन्द हवा उसके खुले बालोंको उड़ा रही है; और उसकी आँखोंसे जो पट-पट आंसू गिर रहे हैं, उसका उसे होश ही नहीं।

इतनेमें भूपतिने कमरेमें प्रवेश किया। उसका चेहरा अत्यन्त उदास था और हृदय भाराक्रान्त। भूपतिके आनेका यह समय नहीं था। अखबारके लिए लिखकर और प्रूफ देखकर अन्तःपुर आनेमें उसे अक्सर देर हो जाती है। आज शामके बाद ही वह, मानो किसी सान्त्वनाकी आशासे, चारुके पास चला आया।

भूपतिने कुछ आश्चर्यके साथ पुकारा—"चारु !"

भूपतिकी आवजसे चौंककर चारु चटसे उठ बैठी। उसने यह नहीं सोचा था, कि भूपति आ रहे हैं। भूपतिने उसके बालोंमें उगलियाँ

फेरते हुए स्नेहार्द्र कण्ठसे कहा—"अंधेरेमें तुम अकेली बैठी हो जो! मन्दा कहाँ गई?"

चारुने जैसी कि आशा कर रखी थी, आज दिन-भर वैसा कुछ हुआ ही नहीं। वह निश्चित जानती थी कि अमल आकर माफी मांगेगा। उसके लिए तैयार होकर वह प्रतीक्षा कर रही थी। इतनेमें भूपतिके अप्रत्याशित कण्ठ-स्वरसे मानो वह अपनेको सम्हाल न सकी, एकबारगी रो पड़ी।

भूपतिने घबराकर और व्यथित होकर पूछा—"चारु, क्या हुआ चारु?"

क्या हुआ है, यह बताना मुश्किल है। ऐसा हुआ भी क्या है? कोई खास बात तो हुई नहीं। अमलने अपनी नई रचना उसे न सुनाकर मन्दाको सुनाई है, इस बातको लेकर वह भूपतिके पास क्या शिकायत करे! सुननेसे भूपति क्या हँसेंगे नहीं? इस छोटी-सी बातमें जबरदस्त शिकायतका विषय कहाँ छुपा हुआ है, इसको ढूंढ़ निकालना चारुके लिए असाध्य है। बिना कारण वह इतना दुःख पा रही है, यह बात पूरी तरहसे समझमें न आनेसे उसकी वेदना और भी बढ़ गई है।

भूपति—"बताओ न चारु, तुम्हें क्या हो गया है? मैंने क्या तुमपर किसी तरहका अन्याय किया है? तुम तो जानती ही हो, काम-काजके झंझटमें किस कदर फँसा रहता हूं; अगर तुम्हारे मनको किसी तरहसे चोट पहुंचाई हो, तो वह जान-बूझकर नहीं पहुँचाई।"

भूपति ऐसे विषयमें पूछ रहा है, जिसका उसके पास कोई जवाब नहीं···और इसलिए चारु भीतर-ही-भीतर और भी अधीर हो उठी। उसके ऐसी मनमें आने लगी कि भूपति इस समय उसे किसी तरहसे छुटकारा दे दे तो वह बच जाय।

भूपतिने दूसरी बार भी कुछ उत्तर न पाकर फिर स्नेह-सिक्त स्वरमें कहा—"मैं हमेशा तुम्हारे पास आ नहीं पाता चारु, इसके लिए मैं अपराधी

हूं, मगर अब ऐसा न होगा। अबसे दिन-रात अखबारके पीछे न पड़ा रहूगा। मुझे तुम जितना चाहती हो, उतना ही पाओगी।"

चारु अधीर होकर बोली—"इसलिए नहीं।"

भूपतिने कहा—"तो किस लिए?"—कहकर पलगपर बैठ गया।

चारु विरक्तिके स्वरको छिपा न सकी, बोली—"अच्छा अभी रहने दो इसे, रातको बताऊंगी।"

भूपति क्षण-भर स्तब्ध रहकर बोला—"अच्छा, अभी रहने दो।" और धीरेसे उठकर बाहर चला गया। उसे खुद कुछ कहना था, सो भी नहीं कह सका।

भूपति एक तरहका क्षोभ लेकर बाहर चला गया और यह बात चारुसे छिपी न रही। उसके मनमें आई कि वापस बुला ले। पर बुलाकर कहेगी क्या? अनुताप उसके कलेजेमें छिद-सा गया, पर कोई प्रतिकार उसे ढूंढ़े न मिला।

रात हुई। चारुने आज खूब जतनसे भूपतिकी थाली सजाई, और पंखा हाथमें लिये बैठो रही।

इतनेमें उसने सुना कि मन्दा ऊंचे स्वरसे पुकार रही है—"बिरजू, बिरजू!"—और बिरजू नौकरके आ जानेपर पूछ रही है—"अमल बाबू खा चुके क्या?" बिरजूने जवाब दिया—"खा चुके।" मन्दाने कहा—"खा चुके, और तू पान नहीं ले गया जो?" मन्दा बिरजूको खूब डाटने लगी।

ठीक इसी समय भूपति अन्तःपुरमें भोजन करने बैठा। चारु पंखा करने लगी।

चारुने आज प्रतिज्ञा की थी कि भूपतिके साथ वह प्रफुल्लता और मिठासके साथ खूब बातें करेगी। बातचीतका विषय पहलेसे ही सोचकर वह तैयार हुई बैठी थी। पर मन्दाके कण्ठ-स्वरने उसका विस्तृत आयोजन

तोड़-फोड़ दिया। भोजन कराते समय भूपतिसे वह एक भी बात न कह सकी। भूपति भी अत्यन्त विमर्ष और अन्यमनस्क था। उसने अच्छी तरह खाया भी नहीं। चारुने सिर्फ एक बार पूछा—"कुछ खाते तो हो ही नहीं ?"

भूपतिने प्रतिवाद करते हुए कहा—"क्यों, कम तो नहीं खाया।"

सोनेके कमरेमें दोनोंके पहुंचनेपर भूपतिने कहा—"आज रातको तुम क्या कहनेको थीं ?"

चारुने कहा—"देखो, कुछ दिनोंसे मन्दाका व्यवहार मुझे अच्छा नहीं लग रहा। उसे यहां रखनेकी अब मेरी हिम्मत नहीं पड़ती।"

भूपति—"क्यों, क्या कर डाला ?"

चारु—"अमलके साथ वह इस ढंगसे पेश आती है कि देखनेवालेको शरम आ जाय !"

भूपतिने हँसकर कहा—"हः हः हः, तुम पागल तो नहीं हो गई ! अमल अभी लड़का ही है, उस दिनका—"

चारु—"तुम तो घरकी खबर कुछ रखते नहीं, सिर्फ बाहरकी खबरें ही बटोरते फिरते हो ! कुछ भी हो, बेचारे भइयाके लिए मुझे सोच है। उन्होंने कब खाया, कब नहीं खाया, मन्दा इस बातकी खोज ही नहीं रखती ; और अमलके लिए ऐसी कि पानमें जरा चूना भी कम हो जाय तो नौकर-चाकरोंको डाट-फटकारकर अनर्थ कर डालती है।"

भूपति—"असलमें तुम औरतोंकी जात बड़ी शक्की होती हैं, इतना तो कहना ही पड़ेगा।"

चारुने कहा—"अच्छी बात है, हम औरतें सब शक्की ही सही ; पर ऐसा बेहयापन घरमें न होने दूंगी, कहे देती हूं !"

चारुकी इन-सब बेबुनियाद आशंकाओंसे भूपति मन-ही-मन हँसा और खुश भी हुआ। घर जिससे पवित्र रहे और दाम्पत्य-धर्मको आनुमानिक

या काल्पनिक कलंक भी रंचमात्र स्पर्श न कर जाय, इसके लिए सती-साध्वी स्त्रियोंका अतिरिक्त सावधान और सन्दिग्ध दृष्टि रखना, इसमें भी एक माधुर्य और महत्त्व है।

भूपतिने श्रद्धा और स्नेहसे चारुका ललाट चूमकर कहा—"इस बातको लेकर शोर मचानेका अब कोई मौका ही नही आयेगा।—उमापति मैमनसिंहमें प्रैक्टिस करने जा रहा है, मन्दाको भी साथ लेता जायगा।"

अन्तमें अपनी दुश्चिन्ता और इन-सब अप्रिय आलोचनाको दबा देनेके लिए भूपतिने टेबिलसे एक कापी उठाकर कहा—"तुम अपनी रचना मुझे सुनाओ न चारु?"

चारुने कापी छीनकर कहा—"यह तुम्हें अच्छी नही लगेगी, तुम मजाक उड़ाओगे!"

भूपति इस बातसे कुछ व्यथित हुआ, पर उसे छिपाकर हँसता हुआ बोला—"अच्छा, मैं मजाक नही उड़ाऊंगा, ऐसा मन लगाकर सुनूंगा कि तुम्हें भ्रम हो जायगा कि शायद मैं सो गया हू!"

पर भूपति उसपर कुछ प्रभाव न डाल सका,—देखते-देखते सब कापियाँ अनेक आवरणोंमें विलीन गई।

नौवाँ परिच्छेद

भूपति सब बातें चारुसे नहीं कह सका है। उमापति भूपतिके अखबारका कार्याध्यक्ष था। चन्दा वसूल करना, प्रेस और बाजारका लेन-देन करना, नौकरोंको तनखा देना, यह सब काम उसीके जिम्मे था।

इस बीचमें अचानक एक दिन कागजवालेकी तरफसे वकीलकी चिट्ठी पाकर भूपति दंग रह गया। भूपतिपर उसके २७००) रुपये निकलते हैं! भूपतिने उमापतिको बुलाकर कहा--"यह क्या बात है! ये रुपये तो मैं

तुम्हें दे चुका हूं ! कागजवालेका देना चार-पाँच सौसे ज्यादा न होना चाहिए ?"

उमापतिने कहा—"जरूर उसने गलती की है।"

मगर बात दबी नहीं रही। कुछ दिनोंसे उमापति इसी तरह धोखा देता आ रहा है। सिर्फ कागजके बारेमें ही नहीं, भूपतिके नामसे उसने बाजारमें बहुत कर्जा कर लिया है। गाँवमें जो वह अपने लिए पक्का मकान बनवा रहा है उसका अधिकांश सामान उसने भूपतिके नाम लिखाकर लिया है और उसमें बहुत-सा रुपया कागज-खातेका लगा दिया है।

आखिर जब पकड़ ही गया, तो रूखे स्वरसे बोला—"मैं तो भागा नहीं जा रहा ! काम करके मैं धीरे-धीरे चुका दूंगा। तुम्हारी अगर एक कौड़ी भी बाकी रह जाय, तो मेरा नाम बदल देना।"

उसके नाम-परिवर्तनसे भूपतिको कोई तसल्ली नहीं हो सकती। असलमें, रुपयेके नुकसानसे उसे इतना कष्ट नहीं हुआ था, पर अकस्मात् इस विश्वासघातसे उसके पैरोंके नीचेसे जमीन निकल गई।

उस दिन वह असमयमें घरके भीतर गया था। संसारमें कम-से-कम एक विश्वास करने लायक जगह है, क्षणभरके लिए इस बातका अनुभव कर आनेके लिए उसका हृदय व्याकुल हो उठा था। परन्तु चारु तब अपने ही दुःखसे संध्या-प्रदीप बगैर जलाये खिड़कीके पास अँधेरेमें बैठी थी।

उमापति दूसरे ही दिन मैमनसिंह जानेको तैयार हो गया। बाजारवालोंको मालूम होनेके पहले ही वह खिसक जाना चाहता है। भूपति मारे घृणाके उमापतिसे बोला तक नहीं; और भूपतिकी उस मौनावस्थाको उमापतिने अपना सौभाग्य समझा।

अमलने आकर मन्दासे पूछा—"मन्दा भाभी, क्या बात हुई ? चीज-वस्त बाँधनेकी यह धूम कैसी ?"

मन्दा—"और नहीं तो क्या, जाना तो पड़ेगा ही! हमेशा क्या बनी ही रहूंगी?"

अमल—"कहांकी तैयारी हो गई?"

मन्दा—"देशको।"

अमल—"क्यों, यहां क्या तकलीफ हो गई?"

मन्दा--"तकलीफ मुझे क्या है बताओ? तुम सबोंके साथ थी, आरामसे ही थी। लेकिन औरोंको तकलीफ होने लगी जो!"—इतना कहकर उसने चारुके कमरेकी तरफ इशारा किया।

अमल गम्भीर होकर चुप हो रहा। मन्दाने कहा--"छि: छि:, कैसी शरमकी बात है! बाबूने अपने मनमें क्या सोचा होगा?"

अमलने इस बातको लेकर आगे कुछ चर्चा नहीं की। अपने मनमें इतना समझ लिया कि चारुने उन दोनोंके बारेमें भइयासे ऐसी कोई बात कही है, जो कहनेकी नहीं है।

अमल घरसे निकलकर रास्तेमें टहलने लगा। उसकी ऐसी तबीयत हो गई कि वह इस घरमें अब वापस न आवे। भइयाने अगर भाभीकी बातपर विश्वास करके उसे अपराधी समझ लिया हो, तो मन्दाको जिस रास्ते चलना पड़ा है उसे भी वही रास्ता पकड़ना चाहिए। मन्दाको विदा करना एक हिसाबसे अमलके लिए निर्वासनका आदेश है; सिर्फ वह मुंहसे कहा नहीं गया, बस। इसके बाद उसका कर्तव्य बिलकुल स्पष्ट है, अब एक क्षण भी यहां नहीं रहा जा सकता। मगर भइया उसके विषयमें मन-ही-मन किसी तरहकी अनुचित धारणा बनाये रखेंगे, ऐसा भी नहीं हो सकता। इतने दिनोंसे वे उसे अक्षुण्ण विश्वाससे घरमें स्थान देकर उसका पालन-पोषण करते आये हैं, उस विश्वासपर अमलने किसी भी अंशमें चोट नहीं पहुचाई, यह बात भाई साहबको बगैर समझाये वह कैसे जा सकता है?

भूपति उस समय रिश्तेदारोंकी कृतघ्नता, पावनेदारोंके ताकाजे, ऊटपटांग हिसाब और रीती तहवीलको लेकर माथेपर हाथ धरे चिन्तामें डूबा हुआ था। इस शुष्क मानसिक दुःखमें उसका कोई साथी न था। वह गभीर मनोवेदना और ऋणके साथ अकेला खड़ा होकर युद्ध करनेके लिए तैयार हो रहा था।

इतनेमें अमलने आँधीकी तरह उसके कमरेमें प्रवेश किया। भूपतिने अपनी अथाह चिन्तामें से सहसा चौंककर उसकी तरफ देखा। बोला—"क्या खबर है अमल?" अकस्मात् ऐसा मालूम हुआ, जैसे अमल कोई और एक दुःसंवाद लेकर आया हो।

अमलने कहा—"भइया, मुझपर सन्देह करनेका क्या कोई कारण हुआ है?"

भूपतिने आश्चर्यके साथ कहा—"तुम्हारे ऊपर सन्देह?"—और मन-ही-मन सोचने लगा, जैसी दुनिया देख रहा हूं, किसी दिन अमलपर भी सन्देह करना पड़े, तो कोई ताज्जुब नहीं!

अमलने कहा—"भाभीने क्या मेरे चरित्रके सम्बन्धमें तुम्हारे पास कोई शिकायत की है?"

भूपतिने सोचा—ओह, यह बात है! खैर, जीमें जी तो आया। स्नेहका अभिनय है। उसने सोचा था कि सर्वनाशपर शायद और कोई सर्वनाश हो गया। मगर भयंकर संकटके समयमें भी इन सब तुच्छ विषयोंको सुनना ही पड़ता है। दुनिया एक तरफ पुलको झकझोरती भी रहेगी और दूसरी तरफ उस पुलको अपनी शाक सब्जीकी डलिया पार करनेके लिए तागीद करनेसे भी बाज नहीं आयेगी। दुनियाका दस्तूर ही यही है।

और कोई बवत होता, तो भूपति अमलका मजाक उड़ाता; पर आज उसमें वह प्रसन्नता न थी। उसेने कहा—"पागल तो नहीं हो गया?"

अमलने फिर पूछा--"भाभीने कुछ कहा नहीं है ?"

भूपति - "तुमसे वे प्यार करती हैं, इसलिए कुछ कहा भी हो तो उसमें गुस्सा होनेकी कोई बात नहीं।"

अमल—"काम-धन्धेकी कोशिशके लिए मुझे और कहीं जाना चाहिए ?"

भूपतिने उसे धमकाते हुए कहा—"अमल, तुम ऐसा लड़कपन कर रहे हो, जिसका ठीक नहीं। अभी पढ़ो-लिखो; काम-धन्धा पीछे होता रहेगा।"

अमल उदास चेहरा लिये वहांसे चला आया। और भूपति अपने अखबारके ग्राहक-रजिस्टरमें लिखे हुए तीन सालके चन्देके साथ खाता-बहीका जमा-खर्च मिलाने बैठ गया।

दसवाँ परिच्छेद

अमलने यह तय किया कि भाभीके साथ मुकाबिला करा देना होगा, इस बातको बगैर खतम किये नहीं छोड़ना चाहिये। भाभीको जो-जो कड़ी-कड़ी बातें सुनानी हैं उन्हें भी वह मन-ही-मन याद करने लगा।

मन्दाके चले जानेपर चारुने संकल्प किया कि अमलको वह अपनेसे बुलवाकर उसका रोष शान्त कर देगी। मगर किसी रचना सुनानेके बहाने बुलाना होगा। अमलकी ही एक रचनाके अनुकरणपर उसने 'अमावस्याका प्रकाश' शीर्षक एक लेख तैयार कर लिया है। चारु इतना समझ गई है कि अमलको उसकी स्वतन्त्र शैलीकी रचना पसन्द नहीं आती।

पूर्णिमा अपना साराका सारा प्रकाश प्रकट कर देती है, इसके लिए चारुने अपनी नई रचनामें उसे काफी डाट-फटकारकर लज्जित किया है। उसने लिखा है—"अमावस्याके अतलस्पर्श अन्धकारमें षोडश-कलापूर्ण

चन्द्रमाका सम्पूर्ण प्रकाश स्तर-स्तरमें आबद्ध पड़ा है, उसकी एक किरण भी खोई नहीं है, इसीसे पूर्णिमाकी उज्ज्वलतासे अमावस्याकी कालिमा इतनी परिपूर्ण है।" इत्यादि। अमल अपनी सभी रचनाएँ सबके सामने प्रकट कर देता है और चारु ऐसा नहीं करती, पूर्णिमा और अमावस्याकी तुलनामें क्या इस बातका आभास है?

इधर इस परिवारका तीसरा व्यक्ति भूपति किसी आसन्न ऋणकी तागीदसे छुटकारा पानेके लिए अपने परम मित्र मोतीलालके पास गया था।

मोतीलालके संकटके समयमें भूपतिने उसे कई हजार रुपये उधार दिये थे, और आज वह अपने इस घोर संकटमें उससे वे रुपये माँगने गया था। मोतीलाल नहा-धोकर अपने उघड़े बदनपर पंखेकी हवा लगा रहा था और सामने लकड़ीके बकसपर कागज रखकर उसपर छोटे-छोटे अक्षरोंमें हजार बार दुर्गाका नाम लिख रहा था। भूपतिको देखकर अत्यन्त सहृदयताके साथ बोला—"आओ आओ, आजकल तो तुम्हारे दर्शन ही नहीं मिलते!"

मोतीलालने रुपयेकी बात सुनकर जमीन-आसमानकी चिन्ता करते हुए कहा—"किन रुपयोंकी बात कह रहे हो! इधर तुमसे कुछ लिया है क्या?"

भूपतिने सन् और तारीखकी याद दिलानेपर मोतीलालने कहा—"अच्छा उसे तो बहुत दिन हो गये तमादी हुए!"

भूपतिकी दृष्टिमें उसका चेहरा मानो चारों तरफसे बदल-सा गया। दुनियाके जिस हिस्सेसे नकाब खुलकर गिर पड़ा, उस हिस्सेको देखकर भूपतिके रोंएँ खड़े हो गये! सहसा बाढ़ आ जानेपर डरा हुआ आदमी जिधर सबसे ज्यादा ऊँचा देखता है उसी तरफ भागने लगता है। संशयाक्रान्त बहिःसंसारसे भूपति उसी तरह बड़े जोरसे अपने अन्तःपुरकी ओर भागा। मन-ही-मन कहने लगा—'दुनियामें और चाहे जो भी हो, कम-से-कम चारु तो मुझे धोखा नहीं देगी।'

चारु उस समय खाटपर बैठी, गोदमें तकिया और तकियेपर कापी रखकर, झुकी हुई कुछ लिख रही थी। भूपति जब बिलकुल ही उसके पास आकर खड़ा हो गया तब उसे होश आया; वह जल्दीसे पाँवके नीचे कापी दबाकर बैठ गई।

हृदयमें जब व्यथा रहती है तब जरा-सी बातसे बड़ी-भारी चोट लगती है। चारुको ऐसी अनावश्यक शीघ्रतासे अपनी कापी छिपाते देखकर भूपतिके मनको गहरी चोट पहुंची।

भूपति धीरेसे खाटपर चारुके पास बैठ गया। चारु अपने रचना-स्रोतमें अप्रत्याशित बाधा आ जानेसे और भूपतिके आगे सहसा कापी छिपानेकी व्यस्ततासे ऐसी हो गई कि उसके मुंहसे कोई बात ही नहीं निकली।

उस दिन भूपतिको अपनी तरफसे कुछ कहना या कहलवाना नहीं था। वह रीते-हाथ चारुके पास प्रार्थी होकर आया था चारुकी तरफसे आशकाधर्मी प्रेमका कोई एक प्रश्न या जरा-सी कोई प्रेमकी बात मिल जानेसे ही उसके घावपर मरहम पड़ जाता। मगर 'लक्ष्मी होते, लछमी गई; क्षण-भरकी आवश्यकता मिटानेके लिए चारुको मानो प्रेम-भण्डारको चाभी कहीं भी ढुंढ़े नहीं मिली। दोनोंके कठोर मोनसे घरकी नीरवता अत्यन्त निबिड़ हो उठी।

कुछ देर बिलकुल चुप रहकर भूपति एक गहरी साँस लेकर खाट परसे उठा और धीरे-धीरे बाहर चला गया।

उसी समय अमल बहुत-सी कड़ी-कड़ी बातोंका बोझ लिये हुए जल्दी-जल्दी चारुके कमरेकी तरफ आ रहा था; बीच ही में भूपतिका बिलकुल सूखा सफेद-फक चेहरा देखके उद्विग्न होकर खड़ा हो गया, बोला—"भइया, कुछ तबीयत खराब है क्या?"

अमलका स्निग्ध स्वर सुनते ही सहसा भूपतिका सम्पूर्ण हृदय अपने अश्रु-भारसे सहसा मानो उफन-सा उठा। कुछ देर तक उसके मुंहसे

बात नहीं निकली। जबरदस्ती अपनेको सम्हालकर आर्द्र कंठसे उसने कहा—"कुछ हुआ नहीं है अमल। अबकी बार अखबारमें तुम्हारा कोई लेख निकल रहा है क्या?"

अमलने जो कड़ी-कड़ी बातें इकट्ठी कर रखी थीं वे कहाँ गईं? जल्दीसे भाभीके कमरेमें जाकर पूछने लगा—"भाभी, भइयाको क्या हुआ है बताओ तो?"

चारुने कहा—"कहाँ, ऐसा तो कुछ मालूम नहीं हुआ! किसी दूसरे अखबारने शायद उनके अखबारको गालियाँ दी होंगी।"

अमल सिर हिलाने लगा।

बिना बुलाये ही अमल आ गया और स्वाभाविक भावसे बातचीत करने लगा, यह देखकर चारुको बहुत ही आराम मिला। उसने एकबारगी लेखकी बात छेड़ दो, बोली—"आज मैं 'अमावस्याका प्रकाश' नामसे एक लेख लिख रही थी, और जरा चूक जाती तो वे देख ही लेते!"

चारुने निश्चय समझ रखा था कि अमल उसकी नई रचना देखनेके लिए आग्रह करेगा और पीछे पड़ जायगा। इसी अभिप्रायसे उसने अपनी कापी निकालकर जरा हिलाई-डुलाई भी। परन्तु अमलने एक बार तीव्र दृष्टिसे चारुके चेहरेकी ओर देखा—क्या समझा और क्या सोचा, सो नहीं मालूम और चौंककर उठ बैठा। पथिकने मानो पर्वत-मार्गसे चलते चलते सहसा मेघका कुहरा दूर होते ही चौंककर सामने देखा कि हजार हाथ गहरे गड्ढेमें वह पाँव रखने जा रहा था! अमल बिना कुछ बोले एकाएक बाहर चला गया।

चारु अमलके इस अभूतपूर्व आचरणका कुछ अर्थ ही नहीं समझ सकी।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन भूपति फिर बेवक्त शयन-गृहमें पहुंच गया ; और चारुको बुलवा लिया। बोला—"चारु, अमलके लिए बड़ी अच्छी एक सगाई आई है।"

चारु अन्यमनस्क थी। बोली—"अच्छी क्या आई है ?"

भूपतिने कहा—"सगाई !"

चारु—"क्यों, मैं क्या पसन्द नहीं आई ?"

भूपति जोरसे हँस पड़ा। बोला—"तुम पसन्द आई या नहीं, यह बात अभी तक अमलसे पूछी नहीं गई। और अगर आ भी गई होंगी, तो मेरा भी तो थोड़ा-बहुत हक है, उसे मैं चटसे नहीं छोड़नेका !"

चारु—"ऊफ्, क्या बक रहे हो जिसका ठीक नहीं ! तुमने कहा नहीं था अभी कि तुम्हारी सगाई आ रही है ?"

चारुका चेहरा सुर्ख पड़ गया।

भूपतिने कहा—"तो क्या दौड़ा-दौड़ा तुमसे कहने आता ? कोई इनाम मिलनेकी तो आशा थी ही नहीं ?"

चारु—"अमलकी सगाई आई है ? अच्छा ही तो है। फिर देर किस बातकी, कर डालो पक्की।"

भूपति—"वर्धमानके वकील रघुनाथ बाबू अपनी लड़कीके साथ अमलका ब्याह करके उसे पढ़नेके लिए विलायत भेजना चाहते हैं।"

चारुने आश्चर्य-चकित होकर पूछा—"विलायत ?"

भूपति—"हाँ, विलायत !"

चारु—"अमल विलायत जायगा ? बहुत अच्छा रहा। अच्छा ही हुआ। तुम उसे एक बार पूछ तो देखो ?"

भूपति—"मेरे कहनेके पहले तुम एक दफे उसे समझा-बुझाकर कहो तो ठीक रहे न ?"

चारु—"मैं तो हजार बार कह चुकी। वह मेरी बात मानता नहीं। मुझसे अब नहीं कहा जायगा।"

भूपति—"तुम्हें क्या मालूम होता है, वह करेगा नहीं?"

चारु—"और भी तो बहुत बार कोशिश की जा चुकी है, किसी तरह भी तो राजी नहीं हुआ।"

भूपति—"लेकिन अबकी बार इस प्रस्तावको छोड़ना उसके लिए ठीक नहीं। मेरे ऊपर बहुत कर्जा हो गया है, अमलको अब तो मैं पहलेकी तरह आश्रय दे न सकूंगा।"

भूपतिने अमलको बुलवा लिया। अमलके आनेपर उससे कहा—"वर्धमानके वकील रघुनाथ बाबू अपनी लड़कीकी तुमसे सगाई करना चाहते हैं। उनकी इच्छा है कि ब्याह हो जानेके बाद तुम्हें पढ़ानेके लिए विलायत भेजें। तुम्हारी क्या राय है?"

अमलने कहा—"आपकी अगर आज्ञा हो, तो मेरी तरफसे कोई आपत्ति नहीं।"

अमलकी बात सुनकर दोनोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। कहते ही वह राजी हो जायगा, इस बातकी किसीने भी आशा नहीं की थी।

चारु तीव्र स्वरमें मजाक उड़ाती हुई बोली—"भइयाकी आज्ञा होते ही आप अपनी राय दे देंगे। कैसे आज्ञाकारी भाई हैं, जरा देखो तो! भइयापर ऐसी भक्ति अब तक कहाँ गई थी लालाजी!"

अमलने उत्तर न देकर जरा हँसनेकी कोशिश की।

अमलकी चुप्पीसे चारुने मानो उसे चेता देनेके लिए दूनी झड़पके साथ कहा—"ऐसा क्यों नहीं कहते कि अपनी ही तबीयत हो रही है। मन-मन भावे, मुड़ो हिलावे!"

भूपतिने हँसीमें कहा—"अमल तुम्हारे ही खातिर अब तक सिर हिला रहा था, कहीं देवरानीकी बात सुनकर तुम्हें डाह न होने लगे!"

चारु इस बातसे सुर्ख हो उठी; और कोलाहल करके कहने लगी—

"डाह! क्यों नहीं! मुझे डाह कभी नहीं होता। ऐसा कहना तुम्हारा बड़ा अन्याय है।"

भूपति—"लो देखो! अपनी स्त्रीसे मजाक भी नहीं कर सकता!"

चारु—"नहीं, ऐसा मजाक मुझे अच्छा नहीं लगता।"

भूपति—"अच्छा, बड़ा-भारी कसूर हो गया! माफ करो। खैर, तो ब्याहकी बात ठीक हो गई न?"

अमलने कहा—"हां।"

चारु—"लड़की अच्छी है या बुरी, इतना भी देखनेका सबर न हुआ! तुम्हारी ऐसी दशा हो आई है, इसका तो जरा आभास तक नहीं जाहिर किया कभी!"

भूपति—"अमल, लड़की देखना चाहो, तो उसका भी इन्तजाम किया जा सकता है। खबर ली है मैंने, लड़की सुन्दर है।"

अमल—"नहीं, देखनेकी तो कोई जरूरत नहीं समझता।"

चारु—"इनकी बात तो सुनो! ऐसा भी कहीं होता है? पर हम लोगोंको तो कम-से-कम देख लेनी चाहिए।"

अमल—"नहीं भइया, देखा-देखीमें झूठ-मूठको देर करनेकी जरूरत नहीं मालूम होती।"

चारु—"जरूरत क्या है जी, देर होनेसे छाती जो फटने लगेगी! तुम मौर बांधकर अभी निकल पड़ो न! क्या खबर, तुम्हारी राज-सम्पदा हीरा-जवाहरातको कोई और उड़ा ले गया 'तो!"

अमलको चारुका कोई भी मजाक विचलित न कर सका।

चारु फिर बोली—"विलायत भागनेके लिये तुम्हारा भीतरसे मन फड़फड़ा रहा है, क्यों? यहां तुम्हें कोई मार रहा था या बांध रहा था? हैट-कोट पहनके साहब बगैर बने आजकलके लड़कोंका मन ही नहीं भरता! लालाजी, विलायतसे लौटकर हम जैसे काले आदमियोंको पहचान तो सकोगे?"

अमलने कहा—"तो फिर विलायत जाना ही क्या हुआ ?"

भूपतिने हँसकर कहा—"काले रूपको भुलानेके लिए ही तो सात समुद्र पार जाना है। सो इसमें डरनेकी क्या बात है चारु, हम तो हैं ही, कालेके भक्तोंकी कमी न होगी।"

भूपतिने खुश होकर उसी वक्त वर्धमानको चिट्ठी लिख दी। विवाहका दिन भी ठीक हो गया।

बारहवाँ परिच्छेद

इस बीचमें अखबार बन्द कर देना पड़ा। भूपतिसे उसका खर्चा न चल सका। सर्वसाधारण नामक जिस विशाल निर्मल पदार्थकी साधनामें भूपति इतने दिनोंसे एकाग्र-चित्तसे लगा हुआ था, उसे एक क्षणमें बहा देना पड़ा। भूपतिके जीवनकी समस्त चेष्टाएँ जो अभ्यस्त मार्गसे गत बारह वर्षोंसे अविच्छिन्न धारामें बहती आ रही थीं वे सहसा एक जगह मानो गहराईमें डूब गईं। इसके लिए भूपति जरा भी तैयार नहीं था। अकस्मात् बाधा-प्राप्त अपने इतने दिनोंके उद्यमोंको अब वह कहाँ ले जाय ? मानो वे भूखे अनाथ बच्चोंकी तरह उसका मुंह ताकने लगे। भूपतिने उन्हें अपने अन्तःपुरमें करुणामयी सेवा-परायण नारीके सामने ले जाकर खड़ा कर दिया।

नारी उस समय क्या सोच रही थी ? वह मन-ही-मन कह रही थी—'कैसे आश्चर्यकी बात है! अमलका ब्याह होगा, यह तो अच्छी ही बात है! परन्तु इतने दिनों बाद हम लोगोंको छोड़कर पराये घर ब्याह करके विलायत जायगा, इससे अमलके मनमें एक बार भी थोड़ी देरके लिए दुबिधा उत्पन्न नहीं हुई ? इतने दिनों तक हम लोगोंने जो उसे इतने जतनसे रखा, उसका कुछ भी खयाल न करके ज्यों ही जरा भागनेका रास्ता मिला, चटसे कमर कसके तैयार हो गया! इतने दिनोंसे मानो वह इसी फिराकमें रहा हो! और मुंहसे कितनी मीठी-मीठी बातें, कितना प्रेम!

आदमोको पहचानना मुश्किल है ! कौन जानता था कि जो आदमी इतना लिख सकता है उसके हृदय जरा भी नही !'

अपने परिपूर्ण हृदयसे तुलना करके चारुने अमलके हृदयकी अत्यन्त अवज्ञा करनेकी कोशिश की, पर कर न सकी। भीतर-ही भीतर निरन्तर एक वेदनाका उद्रेक तप्त शूलकी तरह उसके अभिमानको उकसाने लगा।

अमल आज बाद कल चला जायगा, फिर भी इधर कई दिनोंसे उसका पता ही नहीं। उन दोनोंमें परस्पर जो मनोमालिन्य सा हो गया है उसे मिटा डालसेके लिए भी जरा फुरसत नही मिली ! चारु प्रतिक्षण सोच रही थी कि अमल अपने-आप आयेगा ; इतने दिनोंके मेल-जोलको वह इस तरह तोड़ेगा नही। मगर अमल आया ही नही। अन्तमें जब विलायत जानेका दिन करीब आ पहुचा, तब चारुने खुद ही अमलको बुलवाया।

अमलने कहा—"थोड़ी देर बाद आता हूँ।"

चारु अपने बरामदेमें वहीं-की-वही एक चौकीपर बैठ गई। सबेरेसे बदली होनेसे उमस हो रही थी, चारु अपने खुले बालोंको ढीले तौरमे लपेटकर थके हुए शरीरपर पखेसे धीरे-धीरे हवा करने लगी।

दूर गिरजेकी घड़ीमें ग्यारह बज गये। नहा-धोकर भूपति अभी भोजन करने आयेगा। आध घण्टा समय है। अब भी अगर अमल आ जाय ? जैसे भी हो, उसे इन कई दिनोंका नीरव मनोमालिन्य मिटा ही डालना है। अमलको इस तरहसे विदा नहीं किया जा सकता। इन समवयस्क देवर-भौजाईमें जो हमेशासे मधुर सम्बन्ध चला आ रहा है, जिसमें अनेकों बार अनमेल-मेल, रुठना-मनना, स्नेहके उपद्रव होते रहे हैं और पवित्र सुखालोचनासे जकड़ा हुआ जो चिर-छायामय लता-कुञ्ज बन चुका है, अमल क्या उसे आज धूलमें मिलाकर बहुत दिनोंके लिए बहुत दूर चला जायगा ? उसे जरा भी पश्चात्ताप न होगा ? उसकी जड़में क्या अन्तिम पानी भी न सींच जायगा, उनके बहुत दिनोंके देवर-भाभीके सम्बन्धका शेष अश्रु-जल ?

आध घण्टा बीतना चाहता है। ढीले बालोंको खोलकर उनमें से एक गुच्छा हाथमें लेकर चारु उसे उंगलीपर लपेटने और खोलने लगी। आँसू रोके रुकते नहीं। नौकरने आकर कहा—"बहूजी, बाबूजीके लिए डाभ निकालना है।"

चारुने आँचलसे चाभियोंका गुच्छा खोलकर झन्न-से नौकरके आगे फेंक दिया, वह अचम्भेमें आकर चाभी लेकर चला गया।

चारुकी छातीके भीतरसे कोई चीज ऊपरको आने लगी।

यथासमय भूपति हँसता हुआ खाने बैठा। चारु पंखा हाथमें लिये चौकेमें आकर देखती है, अमल भूपतिके साथ आया है। चारुने उसके मुंहकी ओर देखा भी नहीं।

अमलने पूछा—"भाभी, मुझे बुलाया था?"

चारुने कहा—"नहीं, अब जरूरत नहीं।"

अमल—"तो मैं जाऊँ, मुझे बहुत-सी चीज-वस्त सम्हालनी हैं?"

चारुने दीप्त दृष्टिसे एक बार अमलके मुंहकी ओर देखा, फिर कहा—"जाओ।"

अमल चारुके मुंहकी ओर एक बार देखकर चला गया। भोजन करनेके बाद भूपति कुछ देर तक चारुके पास बैठा करता है। आज लेन-देन और हिसाबके झंझटमें बहुत ही व्यस्त था, लिहाजा आज भीतर ज्यादा देर ठहर न सकनेके कारण कुछ क्षुण्ण होकर बोला—"आज मैं ज्यादा ठहर नहीं सकूंगा, बहुत झंझट है।"

चारुने कहा—"तो जाते क्यों नहीं।"

भूपतिने सोचा, चारु रूठ गई। बोला—"इसका मतलब यह नहीं कि अभी तुरत ही चला जाऊँ। थोड़ी देर आराम करके जाऊंगा।" उसने देखा कि चारु उदास हो गई है। भूपति बहुत देर तक अनुतप्त चित्तसे बैठा रहा, पर किसी भी तरह बातचीतका सिलसिला न जमा सका। बहुत देर तक बातचीत करनेकी वृथा कोशिश करनेके बाद बोला—

"अमल तो कल चला जायगा, कुछ दिन तुम्हें बिलकुल सूना-सूना-सा मालूम होगा।"

चारु बिना कुछ जवाब दिये कोई चीज लानेके लिए चटसे दूसरे कमरेमें चली गई। भूपतिने कुछ देर तक बाट देखी, फिर बाहर चला गया।

चारु आज अमलके चेहरेकी तरफ देखकर ताड़ गई थी कि इन्हीं कई दिनोंमें वह बहुत दुबला हो गया है; उसके चेहरेपर तरुणताकी वह स्फूर्ति बिलकुल ही नहीं रही। इससे चारुको खुशी भी हुई और वेदना भी। आसन्न विच्छेदने ही अमलको सुखा दिया है, इसमें चारुको सन्देह न रहा; परन्तु फिर भी अमलका ऐसा व्यवहार क्यों? क्यों वह दूर-दूर छिपा फिरता है? विदाईके समयको क्यों वह इच्छापूर्वक ऐसा विरोध कटु बनाता जा रहा है?

बिस्तरपर लेटी हुई सोचते-सोचते सहसा वह उठके बैठ गई। अचानक उसे मन्दाकी बात याद आ गई। शायद ऐसा हो कि मन्दासे अमलका प्रेम हो गया हो! मन्दाके चले जानेसे ही अमल इस तरह,—छिः! अमलका मन क्या ऐसा ओछा हो सकता है? इतना क्षुद्र है वह? इतना कलुषित हो सकता है! विवाहित स्त्रीपर उसका मन हो! असम्भव है! सन्देहको दूर करनेकी उसने काफी कोशिश की, पर सन्देह उसे जोरसे काटता रहा।

इसी तरह विदाका समय भी आ पहुंचा, पर बादल साफ नहीं हुए।

अमलने आकर कम्पित कंठसे कहा—"भाभी, मेरे जानेका समय हो गया। अबसे खुद तुम भइयाकी देख-भाल करना! इस समय वे बड़े संकटमेंसे गुजर रहे हैं; तुम्हारे सिवा उनके लिए और कहीं भी सान्त्वनाकी जगह नहीं।"

भूपतिके उदास म्लान भावको देखकर अमलने उसकी भीतरी हालतका पता लगा लिया था। वह इन बातोंका खयाल करके कि भूपति किस तरह चुपचाप अपने दुःख और दुर्दशासे अकेला खड़ा लड़ रहा है, किसीसे

सहायता या सान्त्वना तक उसे नहीं मिली, और फिर भी अपने आश्रित पालित आत्मीय स्वजनोंको उसने इस प्रलय-संकटमें भी विचलित नहीं होने दिया, चुप रहा। उसके बाद उसने चारुकी बात सोची, फिर अपनी बात बिचारी, उसके कान सुर्ख हो उठे, वह जोरसे कह उठा—"चूल्हेमें जाय 'असाढ़का चांद' और 'अमावस्याका प्रकाश'। मैं अगर बैरिस्टर होकर भइयाको कुछ मदद पहुंचा सका, तभी मैं पुरुष हूँ।"

पिछली रातको सारी रात जागकर चारुने सोच रखा था कि विदा देते समय अमलको वह क्या कहेगी। सहास्य अभिमान और प्रसन्न उपेक्षासे माज-माजकर शब्दोंको उसने मन-ही-मन उज्ज्वल और धारदार बना लिया था। परन्तु विदा करते समय चारुके मुंहसे कोई बात ही नहीं निकली। सिर्फ उसने इतना ही कहा—"चिट्ठी तो लिखा करोगे न?"

अमलने जमीनसे सिर लगाकर प्रणाम किया। चारुने दौड़कर अपने कमरेमें जाकर भीतरसे किवाड़ बन्द कर लिये।

तेरहवाँ परिच्छेद

भूपतिने वर्धमान जाकर अमलका ब्याह कर दिया; और उसके बाद अमलको विलायत रवाना करके घर लौट आया।

चारों तरफसे चोटें खा-खाकर विश्वासपरायण भूपतिके मनमें बाहरी संसारके प्रति एक तरहका वैराग्य-सा हो गया था। सभा-समिति और मिलना-जुलना कुछ भी उसे अच्छा नहीं लगता। वह सोचता, इन सब बातोंमें मैंने अपनेको ही ठगा। जीवनके सुखके दिन व्यर्थ ही बीत गये, जीवनका सारभाग घूरेमें बहा दिया।

भूपति मन-ही-मन कहता—'जाने दो, अखबार जाता रहा, अच्छा ही हुआ। मुक्त हो गया। संध्याके समय अँधेरेका सूत्रपात देखते ही पक्षी जैसे अपने नीड़ या घोंसलेको लौटता है, भूपति भी उसी तरह अपना बहुत दिनोंका संचरण-क्षेत्र त्यागकर अन्तःपुरमें चारुके पास पहुँच गया।

मन-ही-मन उसने तय कर लिया कि बस, अब और कहीं नहीं जाना ; यहीं मेरी स्थिति है। जिस अखबारी जहाजको लेकर मैं दिन-भर खेला करता था वह डूब गया ; अब घर चलूं।'

शायद भूपतिके मनमें एक संस्कार-सा बैठा हुआ था कि स्त्रीपर किसीको अधिकार जमाना नहीं पड़ता, स्त्री ध्रुवताराकी भांति अपना प्रदीप आप ही जलाये रखती है ; वह दीप न तो हवासे बुझता है और न तेलकी परवाह करता है। बाहर जब टूटना-फूटना शुरू हुआ था, भूपतिके तब इतनी भी मनमें न आई कि भीतर अन्तःपुरमें भी कहीं कोई दरार पड़ी है या नहीं इस बातको परख देखता।

भूपति शामके वक्त वर्धमानसे लौटा। झटपट मुंह-हाथ धोकर जल्दीसे भोजन कर लिया। अमलके ब्याह और विलायत-यात्राका आद्योपान्त वर्णन सुननेके लिए चारु स्वभावतः उत्सुक होगी जानकर भूपतिने आज जरा भी देर नहीं की। सीधा सोनेके कमरेमें जाकर बिस्तरपर लेट गया और गड़गड़ाका लम्बा नल मुंहमें देकर धुआं फेंकने लगा। चारु अभी तक आई नहीं, शायद घरका काम-धन्धा कर रही होगी। तमाखू जल जानेके बाद भूपतिको नींद आने लगी। क्षण-क्षणमें नींद उचट जाती तो वह चौंककर उठ बैठता ; और सोचता, अभी तक चारु आ क्यों नहीं रही है? अन्तमें भूपतिसे रहा नहीं गया, उसने चारुको बुलवा भेजा। चारुके आनेपर भूपतिने पूछा—"चारु, आज इतनी देर क्यों कर ली?"

चारुने कोई जवाबदेही न करके कहा—"हां, आज देर हो गई।"

चारुके आग्रहपूर्ण प्रश्नके लिए भूपति प्रतीक्षा किये रहा ; पर चारुने कुछ पूछा ही नहीं। इससे भूपति कुछ दुःखित हुआ। तो क्या चारुका अमलसे स्नेह नहीं था? अमल जब तक यहां मौजूद था तब तक चारु उसके साथ खूब हँसती-खेलती रही ; और ज्यों ही वह चला गया त्यों ही उसके विषयमें ऐसी उदासीनता! ऐसे विपरीत व्यवहारसे भूपतिके मनमें खटका-सा हो गया ; वह सोचने लगा—'तो क्या चारुके हृदयमें गहराई

नहीं है ? सिर्फ वह हँसना-खेलना ही जानती है, स्नेह-प्रेम नहीं कर सकती ? स्त्रियोंके लिए ऐसा अनासक्तिका भाव तो अच्छा नहीं !'

चारु और अमलकी मित्रतासे भूपतिको आनन्द होता था। इन दोनोंका लड़कपन भरी और मेल, सलाह और खेल, उसके लिए कुतूहलकी चीज थी। चारु अमलकी जो हमेशा खातिरदारी किया करती थी उससे चारुकी सुकोमल सहृदयताका परिचय पाकर भूपति मन-ही-मन खुश हुआ करता था।

परन्तु आज वह आश्चर्यके साथ सोचने लगा, यह सब-कुछ क्या ऊपरी बातें थी ? हृदयमें उसकी क्या कहीं कोई नींव नहीं थी ? भूपतिने सोचा, चारुके अगर हृदय नहीं हुआ तो अब वह कहाँ जाकर आश्रय लेगा ?

धीरे-धीरे परीक्षा करनेके लिए भूपतिने बात छेड़ी—"चारु, तुम थीं तो अच्छी तरह ? तबीयत तो खराब नहीं रही ?"

चारुने संक्षेपमें उत्तर दिया—"अच्छी ही है।"

भूपति – "अमलका ब्याह तो हो गया।"

इतना कहकर भूपति चुप रहा। चारुने तत्कालोचित कोई संगत बात कहनेकी कोशिश की, पर उसके मुंहसे बात ही नही निकली ; वह जड़वत् चुप रह गई।

भूपति स्वभावतः किसी चीजको गौरके साथ नहीं देखता ; परन्तु अमलकी विदाईका शोक उसके अपने मनमें लगा हुआ था, इसलिए चारुकी उदासीनतासे उसे चोट पहुँची। उसकी इच्छा थी कि समवेदनासे व्यथित चारुके साथ अमलकी बातचीत करके हृदयका भार हलका करता।

भूपतिने कहा - "लड़की देखनेमें बहुत अच्छी है। चारु, सो रही हो क्या ?"

चारु—"नहीं।"

भूपति—"बेचारा अमल अकेला चला गया। जब उसे रेलमें चढ़ा

दिया, तो वह बच्चेकी तरह रोने लगा। देखकर इस बुढ़ापेमें भी मैं अपने आँसू न रोक सका। डब्बेमें दो अंगरेज बैठे हुए थे, मरदोंको रोते देख उन लोगोंको बड़ा मजा आया!"

बत्ती बुझी-सी करके पलंगके अंधेरेमें पहले तो चारु करवट लेकर सो गई, उसके बाद अचानक जल्दीसे बिछौनेसे उठकर चली गई। भूपतिने चौंककर पूछा—"तबीयत कुछ खराब है क्या चारु?"

कोई उत्तर न पाकर वह भी उठ बैठा। पासके बरामदेसे दबे हुए रोनेका शब्द सुनकर वह घबराया हुआ बरामदेमें पहुंचा, देखा तो चारु वहाँ जमीनपर औंधी पड़कर अपने रोनेको रोकनेकी कोशिश कर रही है!

ऐसे जबरदस्त शोकोच्छ्वासको देखकर भूपति दंग रह गया सोचने लगा, चारुको क्या मैंने गलत समझा था? चारुका स्वभाव इतना भीतरा कि मेरे पास भी हृदयकी कोई वेदना प्रकट नहीं करना चाहती! जिनकी ऐसी प्रकृति है उनका प्रेम गहरा होता है और उनकी वेदना भी बहुत ज्यादा होती है। भूपतिने मन ही-मन विचारकर यह तय कर लिया कि चारुका प्रेम साधारण स्त्रियोंके समान बाहर देखनेमें नहीं आता। भूपतिने चारुके प्रेमका उच्छ्वास कभी नहीं देखा। आज वह विशेषरूपसे समझ गया तब, जब देखा कि चारुके प्रेमका गुप्त फैलाव भीतरकी ओर ही ज्यादा है। भूपति खुद भी बाहर प्रकट करनेमें अपटु है; और इसलिए चारुकी प्रकृतिमें भी हृदयावेगकी सुगभीर अन्तःशीलताका परिचय पाकर उसे एक तरहकी तृप्ति मालूम हुई।

भूपति चारुके पास बैठ गया और कोई बात न करके धीरे-धीरे उसकी देहपर हाथ फेरने लगा। कैसे सान्त्वना दी जाती है, भूपति इस बातको नहीं जानता। इस बातको वह समझा ही नहीं कि शोकको जब कोई अन्धकारमें गला दबाकर हत्या कर डालना चाहता है तब कोई साक्षी बैठा रहे तो उसे अच्छा नहीं लगता।

चौदहवाँ परिच्छेद

भूपतिने जब अपने अखबारसे छुट्टी ली थी तब उसने अपने मनमें भविष्यका चित्र खींच लिया था। उसने प्रतीज्ञा की थी कि वह किसी तरहकी दुराशा या दुश्चेष्टामें नहीं फँसेगा ; चारुको लेकर पढ़ना-लिखना, लाड़-प्यार, प्रेम और प्रतिदिनके गार्हस्थिक कर्तव्य पालन करता हुआ जीवन बितायेगा। उसने सोचा था, जो घरेलू सुख सबसे सुलभ और साथ ही सुन्दर है, हमेशा हिलाने-डुलाने लायक और साथ ही पवित्र और निर्मल है, उसी सहज-प्राप्य सुखसे वह अपने जीवन-गृहके एक कोनेमें सांध्य-दीप जलाकर निभृत शान्तिकी अवतारणा करेगा। हँसी-मजाक, गप-शप, आपसमें मनोरञ्जनके लिए छोटी-मोटी तैयारियाँ, इसमें ज्यादा कोशिशकी जरूरत नहीं और सुख काफी मिलता है।

परन्तु काम पड़नेपर देखा कि वह सुख सहज नहीं है। जिसे कीमत देकर नहीं खरीदना पड़ता वह अगर अपने हाथके पास अपने-आप न मिले, तो उसे फिर कहीं भी किसी भी तरह ढूँढ़ निकालना मुश्किल है।

भूपति किसी भी तरह चारुके साथ घनिष्ठता नहीं जमा सका। इसके लिए उसने अपनेको ही दोष दिया। उसने सोचा कि बारह साल तक लगातार अखबारमें लिखते-लिखते वह स्त्रीके साथ कैसे बातचीत या गप-शप की जाती है, इस विद्याको बिलकुल भूल गया है। सांध्य-दीपके जलते ही भूपति आग्रहके साथ घर आ जाता है। वह दो-एक बात करता है, चारु दो-एक बात करती है ; उसके बाद भूपतिकी समझ ही में नहीं आता कि वह क्या करे ? अपनी इस असमर्थतासे स्त्रीके सामने वह लज्जित होता रहता है। स्त्रीके साथ गप-शप करना उसने जितना सहज समझ रखा था, वह उस मूढ़के लिए उतना ही कठिन निकला। इससे तो सभामें व्याख्यान देना सहज है।

संध्याके बादके जिस समयको उसने हँसी-मजाक और लाड़-प्यारके

रमणीय बना डालनेकी कल्पना की थी उस समयका काटना अब उसके लिए एक समस्या-सी हो गई। कुछ देर तक कोशिशके साथ मौन रहकर वह सोचता कि उठकर चल दे ; पर उठके चले आनेसे चारु क्या सोचेगी, यह सोचकर उससे उठा भी नहीं जाता। कहता—"चारु, ताश खेलोगी ?" चारु और कोई उपाय न देख कहती—"हाँ।" कहकर इच्छा न होते हुए भी ताश उठा लाती ; और बहुत गलतियाँ करके हार जाती। उस खेलमें कोई आनन्द ही नही आता।

भूपतिने बहुत सोच-विचारकर एक दिन चारुसे पूछा—"चारु, मन्दाको बुला लिया जाय तो कैसा ? तुम बिलकुल अकेली पड़ गई हो ?"

चारु मन्दाका नाम सुनते ही भक-से जल उठी। बोली—"नहीं, मन्दाकी मुझे जरूरत नहीं।"

भूपति हँस दिया ; मन-ही-मन खुश हुआ। सती-साध्वी स्त्रियाँ जहाँ सती-धर्मका जरा भी व्यतिक्रम देखती हैं वहाँ धीरज नहीं रख सकतीं !

विद्वेषके पहले धक्केको सम्हालकर चारुने सोचा, मन्दा रहेगी तो शायद भूपतिको बहुत-कुछ प्रसन्न रख सकेगी। चारु इस बातको समझकर दुःखित हो रही थी कि भूपति उससे मानसिक सुख चाहता है, और उससे वह किसी भी तरह देते नहीं बनता। भूपति विश्व-संसारकी और सब बातोंको छोड़कर एकमात्र चारुसे ही अपने जीवनका सारा आनन्द आकर्षित कर लेनेकी कोशिश कर रहा है। इस एकाग्र चेष्टाको देखकर और अपने हृदयकी दीनता अनुभव करके चारु भयभीत हो गई। इस तरहसे कैसे और कितने दिन कटेंगे ? भूपति और किसी चीजका आश्रय क्यों नहीं लेता ? और कोई अखबार क्यों नहीं निकाल देता ? चारुको भूपतिके मनोरञ्जनके लिए अब तक कोई भी अभ्यास नहीं करना पड़ा, भूपतिने उससे किसी तरहकी सेवा नहीं चाही, किसी तरहका सुख भी नहीं चाहा ; और न चारुको उसने अपने लिए सब तरहसे आवश्यक ही बनाया है ; आज वह सहसा अपने जीवनकी सम्पूर्ण आवश्यकताएँ चारुसे ही पूरा करना चाहता

है ; और ऐसी हालतमें चारुको कहीं कुछ सुझाई नहीं देता। भूपतिको क्या चाहिए, क्या होनेसे उसे तृप्ति होगी, इस बातको चारु ठीक तौरसे जानती नहीं ; और जान भी जाय, तो अब उसका पूरा करना उसके बूतेसे बाहरकी बात है।

भूपति अगर धीरे-धीरे आगे बढ़ता, तो चारुके लिए शायद इतना कठिन न होता ; परन्तु सहसा एक रातमें देवालिया होकर उसने जो रीता भिक्षापात्र उसके आगे बढ़ा दिया उससे वह बड़े पसोपेशमें पड़ गई।

चारुने कहा—"अच्छा, मन्दाको बुलवा लो ; उसके रहनेसे तुम्हारी सेवा-टहलमें बहुत-कुछ सहूलियत हो जायगी।"

भूपतिने हँसकर कहा—"मेरी सेवा-टहल ! कोई जरूरत नहीं।"

भूपति दुःखित होकर सोचने लगा, मैं बड़ा नीरस आदमी हूं, चारुको किसी भी तरह मैं सुखी नहीं कर पाता।

यह सोचकर उसने साहित्यमें मन लगाया। मित्रोंमें से कोई उसके घर आता, तो आश्चर्यके साथ देखता कि भूपति टेनिसन, बायरन, बंकिमचन्द्र आदिकी रचनाओंमें मशगूल है। भूपतिके इस अकाल-काव्यानुरागको देखकर उसके मित्र खूब मजाक उड़ाने लगे। भूपति हँसके कहता—"बाँसमें भी फूल लगते हैं, पर कब लगते हैं इसका कोई ठीक नहीं।"

एक दिन शामके वक्त सोनेके कमरेमें बड़ी बत्ती जलाकर भूपतिने, पहले तो जरा सकोच-सा हुआ, कहा—"एक रचना पढ़के सुनाऊँ ?"

चारुने कहा—'सुनाओ न !"

भूपति—"क्या सुनाऊँ ?"

चारु—"जो तुम्हारी इच्छा हो।"

भूपति चारुकी तरफसे ज्यादा आग्रह न देखकर जरा दहल-सा गया। फिर भी साहस लाकर बोला—"टेनिसनकी किताबसे तरजुमा करके तुम्हें सुनाता हूं।"

चारुने कहा—"सुनाओ।"

सब मिट्टी हो गया। सकोच और निरुत्साहसे भूपतिका पढ़ना अटकने लगा, समझानेके लिए ठीक-ठीक शब्द उपस्थित नही हुए। चारुकी शून्य दृष्टि देखकर वह समझ गया कि चारुका मन नहीं लग रहा। उस दीपालोकित छोटेसे कमरेमें, उस रातके एकान्त अवकाशमें वैसा भराव नहीं आया।

भूपतिसे और भी दो-एक बार ऐसा भ्रम हुआ; फिर अन्तमें उसने स्त्रीके साथ साहित्य-चर्चाकी कोशिश करना छोड़ ही दिया।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

जैसे जबरदस्त चोट लगनेसे स्नायु सुन्न पड़ जाती है और शुरू-शुरूमें दर्द मालूम ही नहीं पड़ता, उसी तरह प्रारम्भमें अमलका अभाव चारुको अच्छी तरह मालूम ही नहीं हुआ।

अन्तमें, ज्यों-ज्यों दिन बीतने लगे त्यों-त्यों अमलके अभावसे ससारिक शून्यताकी गहराई क्रमशः बढ़ती ही गई। इस भीषणताका पता लगते ही चारु हतबुद्धि-सी हो गई। निकुंज-वनसे निकलकर वह सहसा यहाँ किस मरुभूमिमें आ गई! दिन-पर-दिन बीतते जाते हैं, और मरुभूमिका विस्तार बढ़ता ही जाता है। इस मरुभूमिका पहले उसे जरा भी ज्ञान न था।

नींद खुलते ही सहसा उसकी छातीमें धक-सी हो जाती; याद आ जाती, अमल नही है। सवेरे जब वह बरामदेमें पान लगाने बैठती है तो क्षण-क्षणमें मालूम होता है, अमल पीछेसे नहीं आयेगा। किसी-किसी समय अन्यमनस्क होकर वह ज्यादा पान लगा डालती, फिर सहसा याद आता कि ज्यादा पान खानेवाले आदमी तो हैं हो नहीं! ज्यों ही भडार-घरमें पैर रखती, उसे याद आ जाता कि अमलके लिए कलेवा नहीं निकालना है। मनका अधैर्य अन्तःपुरके सीमान्तमें जाकर उसे स्मरण दिला देता, अमल कालेजसे नहीं आयेगा। किसी नई पुस्तक, नई रचना, नई खबर या नये मजाककी किसीसे आशा नहीं करना है, किसीके लिए

कोई सिलाईका काम नहीं करना है, कोई रचना नहीं लिखना है, कोई शौकीनीकी चीज खरीदकर नहीं रखना है।

चारु स्वयं अपने असह्य कष्ट और चांचल्यसे विस्मित है। मनोवेदनासे लगातार पीड़ित होते-होते आखिर उसे डर मालूम होने लगा। बार-बार वह अपने-आपसे पूछने लगी—'क्यों, इतना दुःख क्यों हो रहा है? अमल मेरा ऐसा क्या लगता है जो उसके लिए इतना कष्ट सहूँ? मुझे हो क्या गया, इतने दिनों बाद मुझे यह क्या हो गया? नौकर-नौकरानी और रास्तेके मुटिया-मजूर तक निश्चिन्त घूमते-फिरते हैं, और मेरा ऐसा हाल क्यों हो गया? भगवानने मुझे ऐसी आफतमें क्यों डाल दिया?'

बार-बार प्रश्न किया करती और आश्चर्यमें उलझती रहती; मगर दुःखमें जरा भी कमी नहीं आती। अमलकी स्मृति उसके अन्तरंग और बहिरंगमें ऐसी व्याप्त हो गई कि कहीं भी उसे भागे राह नहीं मिलती।

भूपतिको चाहिए तो यह था कि वह अमलकी स्मृतिके आक्रमणसे चारुकी रक्षा करता, लेकिन ऐसा न करके वह विच्छेद-व्यथित स्नेहशील मूढ़ पति बार-बार उसीकी बात याद दिला देता है।

अन्तमें चारुने बिलकुल पतवार छोड़ ही दी। अपनेसे लड़ना उसने बन्द कर दिया; हार मानकर अपनी अवस्थाको बिना विरोधके स्वीकार कर लिया। अमलकी स्मृतिको उसने आदरके साथ हृदयमें प्रतिष्ठित कर लिया।

क्रमशः ऐसा हो उठा कि एकाग्र चित्तसे अमलका ध्यान करना, उसके लिए, अपने मनमें छिपे हुए गर्वका विषय हो गया; मानो वह स्मृति ही उसके जीवनका श्रेष्ठ गर्व हो।

घरके काम-धन्धेसे फुरसत पानेके बाद उसने इसके लिए एक समय निश्चित कर लिया। उस समयमें वह एकन्त कमरेमें, दरबाजा बन्द करके, अमलके साथ अपने जीवनकी प्रत्येक घटनाकी याद किया करती। कभी तकियेपर औंधी पड़कर बार-बार कहती रहती—'अमल, अमल, अमल!'

समुद्र पारसे मानो उसके कानमें उत्तर आता—'भाभी, भाभी, भाभी! चारु अपनी ढबडबाई हुई आँखें मींचकर कहती—'अमल, तुम गुस्सा होकर चले क्यों गये? मैंने किसी दिन कोई दोष नहीं किया। तुम अगर अच्छी तरह हँसी-खुशीसे बिदा होकर जाते, तो शायद मैं इतना दुःख नहीं पाती।' अमलके सामने जैसे वह उससे बात करती, ठीक उसी ढगसे वह ये शब्द उच्चारण करती। कहती—अमल, मैं तुम्हें एक दिनके लिए भी नहीं भूली! एक दिन भी नहीं, एक क्षण भी नहीं! मेरे जीवनमें श्रेष्ठ वस्तुएँ सब तुम्हीने खिलाई हैं, अपने जीवनके सार भागसे प्रतिदिन मैं तुम्हारी पूजा किया करूँगी।'

इस तरह चारुने अपनी घर-गृहस्थी, अपने समस्त कर्तव्योंके अन्तस्तरके नीचे सुरग खोदकर उस निरालोक निस्तब्ध अन्धकारमें अश्रुमालासे सुसज्जित एक गुप्त शोकका मन्दिर बना लिया। वहाँ उसके पति या ससारके और किसी भी आदमीको जानेका अधिकार नहीं रहा। वह स्थान जितना गोपनतम था उतना ही गभीरतम और उतना ही प्रियतम। उसी द्वारसे वह अपने मन्दिरमें ससारके सम्पूर्ण छद्मवेशको त्यागकर अपने अनावृत आत्म-स्वरूपमे प्रवेश करती और वहाँसे बाहर निकलकर फिर नकाब पहनकर ससारके हास्यालाप और क्रिया-कर्मकी रगभूमिपर आ जाती।

सोलहवाँ परिच्छेद

इस तरह मनके साथ द्वन्द्व-विवाद छोड़कर चारुने अपने गम्भीर विषादमें भी एक तरहकी शान्ति प्राप्त कर ली; और एकनिष्ठ होकर पतिकी भक्ति और सेवा करने लगी। भूपति जब सोता रहता तब वह धीरे-धीरे उसके पैरोंके पास अपना सिर रखकर उसकी चरण रज अपनी माँगसे लगाती। सेवा-टहल और घर-गृहस्थीके काममें वह जरा भी त्रुटि नहीं रखती। आश्रित और प्रतिपालित व्यक्तियोंके प्रति किसी तरहकी उपेक्षा होनेपर

भूपति दुःखित होता है, इस बातका खयाल रखकर वह उस काममें भी त्रुटि नहीं होने देती। इस तरह सब काम-काज पूरे करके वह भूपतिकी जूठी थालीका प्रसाद खाकर दिन बिता देती।

इस सेवा और जतनसे भग्नश्री भूपतिको मानो नवयौवन वापस मिल गया। स्त्रीके साथ पहले मानो उसका नवविवाह नहीं हुआ था, मानो अभी हुआ है। साज-सजावट और हास्य-परिहाससे विकसित होकर संसारकी सम्पूर्ण दुश्चिन्ताओंको भूपतिने धकेलकर एक किनारे कर दिया। बीमारीसे उठनेके बाद जैसे भूख बढ़ जाती है और शरीरमें भोग-शक्तिके विकाशकी सचेतनता अनुभव होने लगती है, भूपतिके मनमें भी उसी तरहके एक अपूर्व और प्रबल भावावेशका संचार होने लगा। मित्रोंसे, यहाँ तक कि चारुसे छिपाकर भूपति कविता पढ़ने लगा। मन-ही-मन बोला—'अखबार बन्द करके और बड़ी-बड़ी तकलीफें उठाकर इतने दिनों बाद अब मुझे स्त्री मिली है!'

भूपतिने चारुसे कहा—"चारु, आजकल तुमने लिखना बिलकुल छोड़ क्यों दिया?"

चारुने कहा—"मैं तो बड़ा लिखना जानती हूं!"

भूपतिने कहा—"मैं सच कहता हूं चारु, मैं तो आजकलके किसी भी लेखकको तुम्हारी जैसी भाषा लिखते नहीं देखता! 'विश्वबन्धु' ने जो लिखा था, मेरा मत भी ठीक वही है।"

चारु बोली—"बस रहने भी दो!"

भूपति "यह देखो न" कहकर 'सरोरुह' का एक अंक निकालकर चारु और अमलकी भाषाकी तुलना करने लगा। चारुका चेहरा सुर्ख हो उठा; उसने भूपतिके हाथसे अखबार छीनकर आँचलके भीतर छिपा लिया।

भूपतिने मन-ही-मन सोचा, 'जब तक लिखनेका साथी कोई न हो तब तक लिखना होता नहीं। ठहरो, मुझे भी लिखनेका अभ्यास करना होगा, तब फिर क्रमशः चारुको लिखनेका उत्साह होने लगेगा।'

भूपति अत्यन्त गुप्त रूपसे कापी लेकर लिखनेका अभ्यास करने लगा। कोश देखकर, बार-बार काट-कूटकर, बार-बार नकल करके भूपति अपने बेकार अवस्थाके दिन बिताने लगा। इतने कष्ट और इतनी कोशिशोंसे उसे लिखना पड़ रहा है, लिहाजा अपनी रचनाओंपर क्रमशः उसका विश्वास और ममत्व बढ़ने लगा।

अन्तमें एक दिन उसने अपनी रचना, और किसीसे नकल करवाकर, चारुके हाथमें दी। बोला—"मेरे एक मित्रने हालमें लिखना शुरू किया है। मैं तो कुछ समझता नहीं, तुम एक बार पढ़के देखो तो सही, कैसा लगता है?"

कापी चारुके हाथमें देकर भूपति बाहर चला गया। सरल भूपतिके इस छलको चारु फौरन ताड़ गई।

उसने पढ़ा; लिखनेकी शैली और विषय देखकर वह जरा हँस दी। हाय, चारु अपने पतिकी भक्ति करनेके लिये इतनी तैयारियाँ कर रही है, फिर वह क्यों इतना लड़कपन करके पूजाके अर्घ्यको बखेर देता है? चारुके मुंहसे वाहवाही सुननेके लिए वह क्यों इतनी कोशिश करता है? वह अगर कुछ भी न करता, चारुके मनको अपनी तरफ आकर्षित करनेके लिये अगर वह सर्वदा प्रयास न करता रहता, तो पतिकी पूजा करना चारुके लिये सहज-साध्य होता। चारुकी बड़ी इच्छा थी कि भूपति किसी अंशमें अपने को उससे छोटा न करे।

चारुने कापी मोड़कर तकियाके नीचे रख दी और उसपर कोहनी टेक कर दूर देखती हुई वह बहुत देर तक न-जाने क्या-क्या सोचती रही। अमल भी उसे अपनी नई रचना पढ़नेके लिये दिया करता था।

शामको उत्सुक होकर भूपति अपने शयनगृहके सामनेवाले बरामदेमें रखे हुए फूलका टब देखने लगा, कोई बात पूछनेकी उसे हिम्मत नहीं हुई।

चारुने खुद ही कहा—"यह क्या तुम्हारे मित्रकी पहली रचना है?"

भूपतिने कहा—"हाँ।"

चारुने कहा—"खूब अच्छा लिखा है। पहली रचना मालूम ही नहीं होती।"

भूपति अत्यन्त प्रसन्न होकर सोचने लगा, बेनामी रचनापर अपना नाम कैसे जारी किया जाय?

भूपतिकी कापियाँ बहुत जल्दी-जल्दी भरने लगीं। और नाम प्रकट करनेमें भी देर न लगी।

सत्रहवाँ परिच्छेद

विलायतसे चिट्ठी आनेका कौनसा दिन है, इस बातका चारु हमेशा ध्यान रखती। पहले अदनसे भूपतिके नाम एक चिट्ठी आई, उसमें अमलने भाभीको प्रणाम लिखा। स्विजसे भी अमलकी चिट्ठी आई, उसमें भी भाभीको उसने प्रणाम लिखा। माल्टासे जो चिट्ठी आई उसमें भी भाभीके लिये प्रणाम लिखा आया।

चारुके नाम अमलकी एक भी चिट्ठी नहीं आई। आखिर चारुने भूपतिसे सब चिट्ठियाँ लेकर उन्हें बार-बार उलट-पुलटकर पढ़ देखा। प्रणामके सिवा उनमें और कहीं भी कोई आभास मात्र उसके लिये नहीं था।

चारुने इधर कुछ दिनोंसे जिस शान्त विषादके चँदोएके नीचे आश्रय लिया था, अमलकी उपेक्षासे वह छिन्न-भिन्न हो गया। उसके हृदयके भीतर फिर एक तरहका घात-प्रतिघात शुरू हो गया। उसकी गार्हस्थिक कर्तव्य-स्थितिमें फिर भूमिकम्पकी हलचल जारी हो गई।

अब भूपतिने फिर एक दिन आधी रातको उठकर देखा कि चारु बिस्तर पर नहीं है! इधर-उधर देखनेपर मालूम हुआ कि वह दक्षिणकी खुली खिड़कीके पास बैठी है। भूपतिको देखते ही चारु झटपट उठकर कहने लगी—"आज बड़ी गरम है, इसीसे जरा हवामें आ बैठी हूं।"

भूपति उद्विग्न हो उठा; और उसने पलंगके ऊपर पंखा खिंचवानेका

इन्तजाम कर दिया ; और साथ ही चारुके स्वास्थ्य बिगड़नेकी आशङ्कासे हमेशा उसपर दृष्टि रखने लगा।

चारु हँसकर कहा करती— "मैं बड़े मजेमें हूँ, क्यों तुम झूठमूठको फिकर किया करते हो ?'

इतनी-सी हँसी खिलानेके लिये चारुको अपने हृदयकी सारी शक्ति लगा देनी पड़ती।

अमल विलायत पहुच गया। चारुने सोचा था, रास्तेमें उसके लिये अलग चिट्ठी लिखनेका शायद काफी मौका नहीं मिला होगा ; विलायत पहुंचकर अमल उसे लम्बी चिट्ठी देगा। परन्तु लम्बी चिट्ठी नहीं आई।

प्रत्येक बिलायती डाक आनेके दिन चारु अपने समस्त काम-काज और बातचीतके भीतर-ही-भीतर फड़फड़ाती रहती। कहीं भूपति यह न कह दे कि तुम्हारे नामको कोई चिट्ठी नहीं, इस आशकासे भूपतिसे चिट्ठीके बारेमें कुछ पूछनेकी भी उसे हिम्मत नहीं पड़ती।

ऐसी अवस्थामें एक दिन, विलायती डाक आनेके दिन, भूपति धीरे-धीरे भीतर आया और मन्द मन्द मुसकराता हुआ बोला—"एक चीज लाया हूं, देखोगी ?"

चारुने अत्यन्त व्यस्तताके साथ चौंककर कहा—"कहाँ है ?"

भूपतिने मजाक करते हुए दिखाना नहीं चाहा।

चारुने अधीर होकर भूपतिके दुपट्टेके भीतरसे वांछित वस्तु छीन लेनेकी कोशिश की। वह मन-ही-मन सोचने लगी, 'सबेरेसे ही मेरा मन बोल रहा है कि आज मेरी चिट्ठी आयेगी ही, सो क्या कभी व्यर्थ हो सकता है !'

भूपतिको इस मजाकमें बड़ा आनन्द आया ; वह उसे चालू रखनेके लिये पलगके चारों तरफ घूमने लगा और चारु उसका पीछा करने लगी।

आखिर चारु नाखुश होकर पलंगपर बैठ गई ; और उसकी आँखोंमें आँसू भर आये।

चारुके इस जबरदस्त आग्रहसे भूपति बहुत ही खुश हुआ, और अन्तमें दुपट्टेके भीतरसे अपनी रचनाकी कापी निकालकर चटसे चारुकी गोदमें रखकर बोला—'गुस्सा मत होओ, यह लो!"

अठारहवाँ परिच्छेद

यद्यपि अमलने भूपतिको पहली चिट्ठीमें लिख दिया था कि पढ़ने-लिखनेमें लगे रहनेसे बहुत दिनों तक उसे चिट्ठी लिखनेका समय नहीं मिलेगा, मगर फिर भी दूसरी डाकसे उसकी चिट्ठी न आनेसे सारी घर-गृहस्थी चारुके लिए कंटकशय्या हो उठी।

शामके बाद बातों-ही-बातोंमें चारुने अत्यन्त उदासीनभावसे शान्त स्वरमें अपने पतिसे कहा—"क्यों जी, विलायतको एक तार देकर खबर न मँगा लो कि अमल कैसे है?"

भूपतिने कहा—"दो हफ्ते पहले उसकी चिट्ठी आ चुकी है कि अब वह पढ़ने-लिखनेमें व्यस्त रहेगा।"

चारु—"अच्छा, तो जाने दो। मैंने सोचा था कि परदेशमें हैं, बीमार-ईमार पड़ गये हों; कोई ठीक थोड़े ही है?"

भूपति—"सो बात नहीं, बीमार पड़ता तो खबर भिजवा देता। तार भेजनेमें खरचा भी तो कम नहीं!"

चारु—"खरचा बहुत ज्यादा लगता है? मैं समझती थी कि ज्यादासे ज्यादा एक या दो रुपया लगता होगा।"

भूपति—"क्या कह रही हो! करीब-करीब सौ रुपयेका धक्का है!"

चारु—"तब तो मुश्किल ही है।"

दो दिन बाद चारुने भूपतिसे कहा—"मेरी बहन अभी चुंचड़ामें है, उसकी खबर-सुध ले आ सकते हो?"

भूपतिने कहा—"क्यों, कोई बीमार-ईमार है क्या?

चारु—"नहीं, बीमार तो नहीं,—तुम्हें तो मालूम है, तुम्हारे जानेसे उन लोगोंको कितनी खुशी होती है!"

भूपति चारुके अनुरोधसे घोड़ा-गाड़ीपर सवार होकर हावड़ा स्टेशन चल दिया। रास्तेमें बैलगाड़ियोंकी कतार लगी हुई थी, जिससे उसकी गाड़ी बहुत देर तक रुकी खड़ी रही।

इतनेमें, एक परिचित टेलिग्राफ-पियोन उधरसे जा रहा था, भूपतिको देखकर उसने एक टेलिग्राफ लाकर भूपतिके हाथमें दिया। विलायती टेलिग्राफ देखकर भूपति एकाएक डर गया। सोचा, अमल शायद बीमार पड़ गया। डरते-डरते उसने तार खोलकर देखा, उसमें लिखा था—"मैं सकुशल हूं।"

इसके क्या मानी? उलट-पुलटके देखा तो, प्री-पेड टेलिग्रामका जवाब है!

हवड़ा जाना नहीं हुआ। गाड़ी वापस लौटाकर भूपतिने घर आकर स्त्रीके हाथमें तार दे दिया। भूपतिके हाथमें तार देखते ही चारुका चेहरा सफेद-फक पड़ गया!

भूपतिने कहा—"इसका अर्थ कुछ समझ ही में नहीं आता!"

अनुसन्धान करनेके बाद भूपतिको इसका अर्थ समझमें आ गया। चारुने अपना गहना गिरवी रखकर उन रुपयोंसे जवाबी तार भेजा था।

भूपति सोचने लगा, इतना करनेकी कोई जरूरत ही नहीं थी! मुझसे जरा ज्यादा अनुरोध करती, तो मैं ही तार भेज देता। नौकरके हाथ छिपी तौरसे बाजारमें गहना गिरवी रखने भेजना, यह तो कोई अच्छी बात नहीं!

रह-रहकर भूपतिके मनमें सिर्फ यही प्रश्न उठने लगा—'चारुने क्यों इतनी ज्यादती की?' एक अस्पष्ट सन्देह अज्ञात-रूपसे उसके हृदयमें चुभने लगा। उस सन्देहको भूपतिने प्रत्यक्षरूपसे देखना नहीं चाहा, भूले रहनेकी कोशिश की; पर वेदनाने किसी भी तरह उसका पिंड नहीं छोड़ा।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

अमलकी तबीयत अच्छी है, फिर भी वह चिट्ठी नहीं लिखता? एकदम ऐसी कठोरताके साथ सम्बन्ध-विच्छेद क्योंकर हुआ? एक बार रूबरू इस प्रश्नका उत्तर ले आनेको जी चाहता है, पर बीचमें समुद्र है; पार होनेका कोई रास्ता नहीं! निष्ठुर विच्छेद है, निरुपाय विच्छेद है, सब प्रश्न और समस्त प्रतिकारोंके बाहरका है यह विच्छेद!

चारु अब अपनेको सम्हालकर खड़ी न रख सकी। काम-काज पड़ा रहता है, सभी कामोंमें गलती होती है, नौकर-चाकर चुराया करते हैं; लोग उसके दीन-भावको देखकर कानाफूसी करते रहते हैं; पर किसी भी तरह उसे होश नहीं आता।

होते-होते ऐसा हो गया कि आचानक वह चौंक-चौंक उठती, बात करते-करते जरा रो आनेके लिए उसे उठकर एकान्तमें जाना पड़ता, यहाँ तक कि अमलका नाम सुनते ही उसका चेहरा फक पड़ जाता।

अन्तमें भूपतिने भी सब-कुछ देखा; और जो बात एक क्षणके लिए कभी नहीं सोची थी वह भी सोचनी पड़ी; संसार उसके लिए एकदम वृद्ध शुष्क और जीर्ण-सा हो गया।

बीचमें जो कुछ दिन आनन्दके उन्मेषमें भूपति अन्धा हो गया था, उन दिनोंकी स्मृति उसे लज्जित करने लगी। जो अनभिज्ञ बन्दर जवाहर नहीं पहचानता उसे झूठा पत्थर देकर क्या इसी तरह ठगना चाहिए?

चारुकी जिन बातों से, लाड़-प्यार और व्यवहारसे, भूपति फूला-फूला फिरता था वे सबकी सब बातें याद आ-आकर उसे "मूढ़, मूढ़, मूढ़" कह-कहके बेंत मारने लगीं।

अन्तमें जब उसे अपनी बहुत परिश्रमसे लिखी हुई रचनाओंका खयाल आया तब उसने धरणीको विदीर्ण होनेके लिए कहा। अंकुश-ताड़ितकी तरह जल्दी-जल्दी चारुके पास जाकर भूपतिने कहा—"मेरी वे कापियाँ कहाँ हैं?"

चारुने कहा—"मेरे ही पास हैं।"

भूपतिने कहा—"दो उन्हें।"

चारु उस समय भूपतिके लिए अण्डेकी कचौड़ियाँ सेक रही थी। बोली—"तुम्हें क्या अभी तुरत चाहिए?"

भूपतिने कहा—"हाँ, अभी तुरत चाहिए।"

चारु कड़ाही उतारकर आलमारीसे कापियाँ और कागज वगैरह निकाल लाई।

भूपतिने अधीरताके साथ उसके हाथसे सब छीनकर चटसे जाकर चूल्हेमें झोंक दिया।

चारु जल्दीसे उन्हें निकालनेकी कोशिश करती हुई बोली—"यह तुमने क्या किया?"

भूपतिने उसका हाथ पकड़कर गरजते हुए कहा—"रहने दो!"

चारु आश्चर्य-चकित होकर खड़ी रही। तमाम रचनाएँ देखते-देखते जलकर भस्म हो गईं।

चारु समझ गई। एक गहरी साँस ली; और कचौड़ी सेंकना अधूरा छोड़कर धीरे-धीरे अन्यत्र चली गई।

चारुके सामने रचनाएँ नष्ट कर डालनेका भूपतिका इरादा नहीं था। लेकिन, ठीक सामने ही आग जल रही थी, देखकर कैसा तो उसके सरपर खून सवार हो गया! भूपति अपनेको सम्हाल न सका, और प्रवंचित नासमझके सम्पूर्ण उद्यमका उसने वंचना-कारिणीके सामने ही आगमें डाल दिया।

सब जलकर जब भस्म हो गया, भूपतिकी आकस्मिक उग्रता जब शान्त हो गई, तब भूपतिको खयाल आया कि चारु अपने अपराधोंका बोझ लेकर कैसे गम्भीर विषादसे चुपचाप नीचेको निगाह किये चली गई, और फिर सामने जो देखा तो, वह सोचने लगा—मुझे अण्डेकी कचौड़ी बहुत अच्छी लगती है, इसीसे चारु अपने हाथसे बड़े जतनसे कचौड़ियाँ बना रही थी।

भूपति बरामदेमें जाकर रेलिंगपर झुककर खड़ा हो गया। मन-ही-मन सोचने लगा—मेरे लिए चारुकी ये जो अश्रान्त चेष्टाएँ हैं, ये जो वंचनाएँ हैं, इससे बढ़कर करुणाजनक बात संसारमें और क्या होगी? ये सब वंचनाएँ, ये तो सिर्फ छलना-कारिणीकी हेय छलना मात्र नहीं है; इन छलनाओंके लिए अपने क्षत हृदयकी क्षत यन्त्रणाको चौगुनी बढ़ाकर अभागिनीको इतने दिनोंसे क्षण-क्षणमें अपने हृत्पिण्डसे खून निचोड़कर निकालना पड़ा होगा।

भूपति मन-ही-मन कहने लगा—'हाय अबला, हाय दुःखिनी! इसकी जरूरत नहीं थी, मुझे इन सब बातोंकी कतई जरूरत नहीं थी। इतने दिनोंसे मैं तो प्रेम न मिलनेपर भी, 'नहीं मिला' कहकर जता भी नहीं सका था। मेरे दिन तो सिर्फ लेख लिखने और प्रूफ देखनेमें ही बीत रहे थे, मेरे लिए इतनी कोशिश करनेकी कोई जरूरत ही नहीं थी!'

तब फिर अपने जीवनको चारुके जीवनसे दूर हटाकर—डाक्टर जैसे घातक रोग-ग्रस्त रोगीको देखता है—भूपति निःसम्पर्क व्यक्तिकी तरह चारुको दूरसे देखने लगा। उस क्षीणशक्ति नारीका हृदय कैसे प्रबल संसारके द्वारा चारों तरफसे आक्रान्त हो रहा है। ऐसा कोई आदमी नहीं जिसके आगे सब बातें कह सके, ऐसी बात नहीं जो कही जा सके, ऐसी जगह नहीं जहाँ सम्पूर्ण हृदय खोलकर हाहाकार करके अपना हृदय हलका कर सके, फिर भी उसे इस अप्रकाश्य, अपरिहार्य अप्रतिविधेय, प्रतिदिन पुंजीभूत दुःख-भारको बहन करते हुए बिलकुल सहज-स्वाभाविक स्त्रियोंकी तरह, अपनी स्वस्थ-चित पड़ोसिनोंकी तरह, अपनी घर-गृहस्थीका काम-धन्धा करना पड़ रहा है।

भूपतिने अपने शयन-गृहमें जाकर देखा—जंगलेकी छड़ पकड़े चारु अश्रुहीन दृष्टिसे एकटक बाहरकी ओर देख रही है। भूपति धीरेसे उसके पीछे जाकर खड़ा हो गया, कुछ बोला नहीं, उसके माथेपर हाथ रखकर रह गया।

बीसवाँ परिच्छेद

मित्रोंने भूपतिसे पूछा—"बात क्या है भई? इतने व्यस्त कैसे?"

भूपतिने कहा—"अखबार।"

मित्र—"फिर अखबार? घर-द्वार अखबारकी रद्दीमें लपेटकर गगामें बहा दोगे क्या?"

भूपति—"नहीं, अबकी मैं खुद नहीं निकाल रहा।"

मित्र—"तो?"

भूपति—"मैसूरसे एक अखबार निकलेगा, मुझे उसका सम्पादक बनाया है।"

मित्र—"घर-द्वार छोड़कर एकदम मैसूर चले जाओगे? चारुको साथ लिये जा रहे हो क्या?"

भूपति—"नहीं तो, मामा वगैरह यहाँ आकर रहेंगे।"

मित्र—"सम्पादकीका नशा तुम्हारा छूटा नहीं किसी तरह?"

भूपति—"आदमीके लिये कोई-न-कोई नशा तो चाहिये ही।"

× × ×

चलते वक्त चारुने पूछा—"कब तक आओगे?"

भूपतिने कहा—"तुम्हें जब अच्छा न लगे तब लिख देना, मैं आ जाऊंगा।"

इतना कहकर विदा होकर जैसे ही भूपति दरवाजे तक पहुंचा, वैसे ही चारु सहसा दौड़ी आई और उसका हाथ पकड़कर बोली—"मुझे साथ ले चलो। मुझे यहाँ छोड़ मत जाओ?"

भूपति ठिठककर खड़ा हो गया; और चारुके मुंहकी तरफ देखता रहा। मुट्ठी ढीली हो जानेसे भूपतिके हाथसे चारुका हाथ निकल आया। भूपति चारुके पाससे हटकर बरामदेमें जा खड़ा हुआ।

भूपति समझ गया—अमलकी विच्छेद-स्मृति जिस घरको घेरे हुए

चरों ओरसे ग्रस रही है, चारु दावानल-ग्रस्त हरिणीकी तरह उस घरको छोड़कर भागना चाहती है! पर मेरे विषयमें उसने एक बार भी नहीं सोचा—मैं कहाँ भागकर जाऊँ? जो स्त्री अपने हृदयमें निरन्तर दूसरेका ध्यान करती है, परदेश जाकर भी उसे भूलनेकी छुट्टी नहीं मिलेगी? निर्जन बन्धु-हीन प्रवासमें रोज उसका साथ देना पड़ेगा! दिन-भर परिश्रम करके शामको जब घर लौटूँगा, तब निस्तब्ध शोकाकुल नारीके साथ वह रात कैसी भयानक हो उठेगी? जिसके हृदयके भीतर मृतकका भार है उसे हृदयके पास रखना, यह मैं कब तक कर सकता हूँ? और भी कितने वर्ष रोज-रोज मुझे इस तरह जीना पड़ेगा? जो आश्रय टूट-फूटकर चकना-चूर हो गया है उसकी टूटी-फूटी ईंट-लकड़ियोंको फेंककर भी नहीं जा सकता, उन्हें कंधेपर लादे हुए जाना पड़ेगा!

भूपतिने चारुसे आकर कहा—"नहीं, सो मुझसे नहीं हो सकता।"

एक ही क्षणमें सारा खून ठंडा पड़कर चारुका चेहरा कागजकी तरह सूखा सफेद पड़ गया। चारु पलंगकी पाटी पकड़कर उसके सहारे किसी तरह खड़ी रही।

भूपतिने उसी वक्त कहा—"चलो चारु, मेरे साथ ही चलो।"

चारुने कहा—"नहीं, रहने दो!"

पुत्रयज्ञ

गाँव-भरमें बैजनाथ ही सबसे बड़े अनुभवी और समझदार थे, इसीलिए वे भविष्यका खयाल रखकर वर्तमानका काम चलाते थे। जब उन्होंने ब्याह किया था तब वर्तमान नववधूकी अपेक्षा भावी नवकुमारका मुख ही उन्हें अधिक स्पष्ट रूपसे दिखाई दिया था। विवाहमें शुभदृष्टिके (वर-वधूकी चार आँखें) समय इतनी दूरदृष्टि साधारणतः देखनेमें नहीं आती। बैजनाथ पक्के दुनियादार थे, इसलिए प्रेमकी अपेक्षा पिण्डको ही ज्यादा समझते थे; और 'पुत्रार्थे क्रीयते भार्या' के अनुसार ही उन्होंने विनोदिनीका पाणिग्रहण किया था।

मगर दुनियामें पक्का दुनियादार ही ठगा जाता है। यौवन प्राप्त होनेपर भी जब विनोदिनीने अपना सर्वप्रधान कर्तव्य पालन नहीं किया, तो पुन्नाम नरकका द्वार खुला देखकर बैजनाथ बड़े चिन्तित हो उठे। मरनेके बाद उनके विपुल ऐश्वर्यका कौन भोग करेगा, इस चिन्तामें मरनेसे पहले ही वे उस ऐश्वर्य-भोगसे विमुख हो गये। पहले ही कहा जा चुका है कि वर्तमानकी अपेक्षा भविष्यको ही वे अधिक सत्य समझते थे।

परन्तु युवती विनोदिनीसे सहसा इतनी प्रज्ञताकी आशा नहीं की जा सकती। उस बेचारीका दुर्मूल्य वर्तमान, उसका नव-विकसित यौवन, बिना प्रेमके व्यर्थ ही बीता जा रहा है, यही उसके लिए सबसे बड़ी दुश्चिन्ता थी। पारलौकिक पिण्डकी क्षुधाको वह इहलौकिक चित्त-क्षुधा-दाहके आगे बिलकुल ही भूल बैठी थी। मनुके पवित्र विधान और बैजनाथकी आध्यात्मिक व्यथासे उसके बुभुक्षित हृदयको तिलमात्र भी तृप्ति नहीं हुई।

कोई कुछ भी कहे, पर इस उमरमें तो प्रेम देना और प्रेम पाना ही स्त्रियोंके लिए सबसे बढ़कर है, इसके आगे संसारका कोई भी सुख और कर्तव्य टिक नहीं सकता।

लेकिन विनोदिनीके भाग्यमें नवीन प्रेमकी वर्षा होनेके बजाय पति, फुफुआ-सास तथा घरके अन्यान्य गुरुजनों और गुरुतर जनोंके सम्मिलित आकाशसे तर्जन-गर्जनके साथ शिलावृष्टि होने लगी। सभी-कोई उसे बन्ध्या कहकर अपराधी ठहराने लगे। बेचारी विनोदाके वंचित यौवनका वही हाल हुआ जो कोमल फूलके पौधेको प्रकाश और हवासे हटाकर अँधेरी कोठरीमें बन्द कर देनेसे होता है।

दिन-रात इस तरहकी कानाफूसी और कलह-कलेशमें रहते-रहते जब उसका जी ऊब जाता, तो वह पड़ोसिन कुसुमके यहाँ ताश खेलने चली जाया करती; और उसमें उसका खूब मन लगता। वहाँ 'पुत्' नरककी भीषण छाया सर्वदा मौजूद न रहनेसे हँसी-मजाक और गप-शप करनेमें कोई बाधा नहीं थी।

जिस दिन खेलनेके लिए साथीकी कमी पड़ जाती, उस दिन कुसुम अपने तरुण देवर नगेन्द्रको पकड़ लाती। नगेन्द्र भी विनोदाकी आपत्तिको हँसकर उड़ा देता, और पत्ते बाँटने बैठ जाता। इस दुनियामें सोचो कुछ और होता कुछ है। यह ताशका खेल आगे चलकर कभी संकटमें परिणत हो सकता है, ऐसी पेचीली बातपर कम-उमरमें सहसा विश्वास नहीं होता।

इस विषयमें नगेन्द्रके संकोचकी दृढ़ता भी धीरे-धीरे हवा हो गई। अब वह ताश खेलनेके लिए एकाधिक बार बुलावेकी प्रतीक्षा नहीं करता।

इस तरह विनोदाके साथ नगेन्द्रका अक्सर मेल-मिलाप होने लगा।

नगेन्द्र जब ताश खेलने बैठता, तो ताशकी अपेक्षा सजीवतर पदार्थकी ओर उसका मन और नयन अधिक आकृष्ट होनेसे अक्सर वह हारने लगता। इस पराजयका वास्तविक कारण कुसुम और विनोदा दोनोंसे छिपा न रहा। पहले ही कह चुके हैं कि कर्म-फलका गुरुत्व समझना कम-उमरके बूतेसे बाहर है। कुसुम सोचती कि यह बड़ा मज़ा हो रहा है, और साग्रह यह कल्पना करती कि यह मज़ा क्रमशः पूरे सोलह आनेमें परिणत होकर शीघ्र ही भरपूर हो उठे। प्रेमके

नवांकुरमें छिपे-छिपे पानी सींचना तरुणियोंके लिये सबसे बढ़कर कौतुककी बात है।

विनोदाको भी बुरा नहीं लगा। हृदय जीतनेके तेज अस्त्रको किसी और पुरुषपर पैनानेकी इच्छा करना अन्याय हो सकता है, किन्तु अस्वाभाविक नहीं।

इस तरह, ताशकी हार-जीत और कोट-पीसके चक्करमें कब किस समय दोनों खिलाड़ियोंके हृदयोंमें मेल हो गया, अन्तर्यामीके सिवा दूसरे एक खिलाड़ीने भी देखा और वह खुश हुआ।

एक दिन दोपहरको विनोदा, कुसुम और नगेन्द्र तीनों ताश खेल रहे थे। खेलते-खेलते कुछ देर बाद कुसुम अपने रुग्न बच्चेका रोना सुनकर उठ गई। नगेन्द्र विनोदाके साथ बातें करने लगा। पर दोनोंमें से यह कोई भी न समझ सका कि आखिर क्या बातें हो रही हैं? उनके शरीरका रक्त-स्रोत दोनोंके हृत्पिण्डोंको उद्वेलित करके शरीरकी नस-नसमें तरंगें लेने लगा।

सहसा किसी समय नगेन्द्रके उन्मत्त यौवनने सारे बाँध तोड़ डाले, सहसा उसने विनोदाके दोनों हाथोंको मसककर जोरसे अपनी ओर खींचकर उसका चुम्बन ले लिया। विनोदा नगेन्द्र द्वारा इस तरह अपमानित होकर मारे क्रोधके, क्षोभ और लज्जासे अधीर होकर अपने हाथ छुड़ानेके लिये खींचातानी कर रही थी; इतनेमें दोनोंकी दृष्टि पड़ी—कमरेमें तीसरा कोई घुस आया है। नगेन्द्र नीचेको निगाह किये बाहर निकल भागनेका रास्ता ढूँढने लगा।

नौकरानीने गम्भीर स्वरमें विनोदासे कहा—"बहूजी, तुमको बुआजी बुला रही हैं!"

विनोदा छलछलाती हुई आँखोंसे नगेन्द्रपर बिजली-सी डालती हुई दासीके साथ चली गई।

दासीने जितना देखा था उससे कुछ घटाकर और जितना नहीं देखा

उसमें अच्छी तरह नमक-मिर्च लगाकर ऐसा वर्णन किया कि बैजनाथके अन्तःपुरमें बड़ा-भारी तूफान उठ खड़ा हुआ। विनोदाकी क्या दशा हुई, इसे कहनेकी अपेक्षा कल्पना करना ही सहज है। वह कहाँ तक निपराध है, इस बातको समझानेकी उसने कोशिश तक नहीं की; चुपचाप सिर नीचा किये सहती गई।

बैजनाथने अपने भावी पिण्डदाताके अविर्भावकी सम्भावना अत्यन्त संशयाच्छन्न जानकर विनोदासे कहा—"कलंकिनी, तू मेरे सामनेसे दूर हो जा! घरसे निकल जा।"

विनोदा अपने कमरेमें जाकर दरवाजा बन्द करके बिस्तरपर पड़ रही; उसकी अश्रुहीन आँखें दोपहरकी मरुभूमिकी तरह जलने लगीं। जब संध्याका अन्धकार घना हो आया और बगीचेमें कौओंकी काँव-काँव बिलकुल थम गई तब नक्षत्रोंसे जड़े हुए शान्त आकाशकी ओर देखकर उसे अपनी मा-बापकी याद आने लगी, और दोनों गालोंसे आँसू गल-गलकर गिरने लगे।

उसी रातको विनोदा अपने पति और पति-गृहको हमेशाके लिये छोड़कर न-जाने कहाँ चली गई! किसीने उसकी खोज-खबर तक नहीं ली।

तब तक विनोदाको यह मालूम भी न था कि 'प्रजनार्थं महाभागा' स्त्री-जन्मका महाभाग्य उसे प्राप्त हुआ है, उसके पतिकी पारलौकिक सद्गतिने बच्चेके रूपमें उसके गर्भमें आकर आश्रय लिया है!

इस घटनाके बाद दस वर्ष बीत गये।

इस बीचमें बैजनाथकी साम्पत्तिकी अवस्था काफी उन्नत हो चुकी है। अब वे गाँव छोड़कर कलकत्ते आ गये हैं; और आलीशान मकान खरीदकर वहीं रहने लगे हैं।

परन्तु जितनी ही सम्पत्ति बढ़ने लगी, सम्पत्तिके उत्तराधिकारीके लिये उनका मन उतना ही व्याकुल होने लगा।

एकके बाद एक, दो ब्याह और किये, मगर पुत्र न पैदा होकर कलह

ही पैदा होने लगी। दैवज्ञ पण्डितों और संन्यासी-अवधूतोंसे घर भर गया। जड़ी-बूटी, झाड़-फूँक, ताबीजों और पेटेन्ट दवाओंका ताँता बँध गया। कालीघाटमें इतने बकरीके बच्चे काटे गये कि अगर उनकी हड्डियोंका स्तूप बनाया जाता, तो उसके आगे तैमूरलङ्गका कंकाल-जय-स्तम्भ भी झख मारता। मगर फिर भी, कुछ इनी-गिनी हड्डियों और बहुत ही थोड़े माँससे बना हुआ एक छोटेसे छोटा बच्चा भी बैजनाथके विशाल प्रासादका एक कोना तक दखल करता हुआ न दिखाई दिया। किसी दिन आँख मिचनेपर, उनके पीछे, दूसरेका लड़का आकर दखल जमायेगा और मनमाना खायेगा-पीयेगा-उड़ायेगा, इस दुश्चिन्तामें उनका अपना खाना-पीना भी छूट गया; हर बातमें अरुचि होने लगी।

बैजनाथने और एक विवाह किया। कारण, संसारमें आशाका भी अन्त नहीं, और कन्या-भार-ग्रस्तोंके घर कन्याओंकी भी कमी नहीं।

दैवज्ञोंने जन्मपत्री देखकर बताया कि इस कन्याके पुत्र-स्थानमें जैसा शुभयोग दिखाई देता है, उससे तो बैजनाथके घर प्रजा-वृद्धिमें विलम्ब न होना चाहिये। मगर उसके बाद छै वर्ष बीत गये, फिर भी पुत्र-स्थानके शुभयोगने आलस्य नहीं छोड़ा।

निराशासे बैजनाथकी कमर झुक गई। अन्तमें शास्त्रज्ञ पंडितोंके परामर्शसे प्रचुर व्ययसाध्य वृहत् यज्ञका आयोजन किया गया, जिसमें महीनोंसे अनेक ब्राह्मणोंकी सेवा चलने लगी।

इसी समय देश-व्यापी दुर्भिक्ष हुआ। अकालके मारे गरीबोंका हाल बेहाल था, खाने-बिना दाने-दानेके लिये लोग भटक रहे थे। जिस समय बैजनाथ अपनी विपुल सम्पत्तिपर बैठे हुए सोच रहे थे कि 'मेरा अन्न खायगा कौन', ठीक उसी समय उपवासी देशवासी अपने जलते हुए खाली पेटकी ओर देखकर सोच रहे थे कि 'खायँ क्या ?'

ठीक इसी समय चार महीने तक बैजनाथकी चतुर्थ सहधर्मिणी एक सौ ब्राह्मणोंका पादोदक पान कर रही थीं; और प्रतिदिन प्रातःकाल सौ ब्राह्मण

भूरि भोजन और शामको अपर्याप्त जल-पान करके सकोरा, भांड और दही-चीसे सनी पत्तलोंसे म्यूनिसिपैलिटीकी कूड़ा-गाड़ी भरनेमें लगे हुए थे। अन्नकी गंध पाकर जब फाटकपर अकाल-पीड़ित भूखी जनताका जमघट होने लगा, तो उन्हें मार भगानेके लिए खास दरबान नियुक्त किये गये।

एक दिन सबेरे बैजनाथके संगममर्मरमण्डित आँगनके चबूतरे-पर आसन जमाकर एक स्थूलोदर संन्यासी दो सेर मोहन भोग और डेढ़ सेर दूधका भोग लगा रहे थे—बैजनाथ पट्टवस्त्र पहने हुए दोनों हाथ जोड़कर अत्यंत विनीत भावसे ज़मीनपर बैठे भक्तिपूर्वक उनका भोग लगाना देख रहे थे; ठीक उसी समय किसी तरह दरबानोंकी निगाह बचाकर अपने दुबले-पतले कमज़ोर लड़केके साथ फटे-चिथड़े पहने हुए एक मरीज-सी औरत वहाँ आ पहुँची, उसने अत्यंत क्षीणस्वरमें कहा—"बाबूजी, कुछ खानेको—"

बैजनाथ हड़बड़ाकर, चिल्ला उठे—"गुरदयाल! गुरदयाल!" रंग-ढंग देखकर बेचारी घबड़ा गई, उसने बहुत ही करुण स्वरमें फिर एक बार कहा—"बाबूजी, इस लड़केको दो रोटी डाल दो। भूखके मारे तड़फड़ा रहा है। मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

गुरुदयालने आकर मा और बेटेको धक्के देकर निकाल बाहर किया। भूखसे तड़पता हुआ यह लड़का बैजनाथका एक मात्र पुत्र था। एक सौ परिपुष्ट ब्राह्मण और तीन बलिष्ठ संन्यासी बैजनाथको पुत्र-प्राप्तिकी दुराशामें फँसाकर आनन्दसे उसीका अन्न खाने लगे, पर उस
वहाँ कहीं भी स्थान न था।

समाप्त